केवल आप के लिये
गांव–गांव शहर–शहर देश दुनियां में अपनों तक पहुंचाना है तो भारतीय बस्ती दैनिक वेब www.bhartiyabasti.com और उसका छपा संस्करण सबसे बेहतर माध्यम
सम्पर्क-bhartiyabasti@gmail.com
मो0 9450567450| 9336715406

दैनिक
भारतीय बस्ती

भारतीय बस्ती
www.bhartiyabasti.com के लिये विज्ञापन बुक कराये। विचार, प्रचार का सशक्त माध्यम सम्पर्क
मो0 9336715406
8400925463
भारतीय बस्ती आमंत्रण मूल्य 2रूपया

R.N.I. 38784/81 डाक पंजीकरण सं0 B.S.T 59 बस्ती, वर्ष :48 अंक 67 सोमवार 28 सितम्बर 2026 (बस्ती संस्करण) बस्ती एवं अयोध्या–फैजाबाद से एक साथ प्रकाशित पृष्ठ :4मूल्य:3.00 रुपया www.bhartiyabasti.com

एक नजर

छुट्टी के दिन भी सेवा सेतु शिविर में उमड़ी भीड़

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। बहादुरपुर विकासखंड में चल रहा पांच दिवसीय सेवा सेतु शिविर रविवार को छुट्टी के दिन भी जारी रहा। अवकाश होने के बावजूद बड़ी संख्या में ग्रामीण अपनी समस्याएं लेकर शिविर में पहुंचे। यहां पात्र लोगों को सरकारी योजनाओं की जानकारी देने के साथ आवेदन कराने और लंबित मामलों के समाधान की पहल की जा रही है। शिविर का उद्देश्य ऐसे जरूरतमंद परिवारों को योजनाओं से जोड़ना है, जो अब तक किसी कारण से सरकारी लाभ से वंचित रह गए हैं। रविवार को अवकाश होने के बावजूद शिविर में ग्रामीणों की आवाजाही बनी रही। अलग–अलग गांवों से लोग सरकारी योजनाओं से जुड़ी जानकारी और अपनी समस्याओं के समाधान के लिए पहुंचे। शिविर में मौजूद कर्मचारियों और कार्यकर्ताओं ने ग्रामीणों की समस्याएं सुनीं और उन्हें संबंधित प्रक्रिया की जानकारी दी। सेवा सेतु शिविर में ग्रामीणों को विभिन्न सरकारी योजनाओं के बारे में बताया जा रहा है। पात्रता के अनुसार लाभ लेने के लिए जरूरी दस्तावेज और आवेदन प्रक्रिया की जानकारी दी जा रही है। इससे ग्रामीणों को योजनाओं के लिए आवेदन करने में सहूलियत मिल रही है। शिविर में केवल योजनाओं की जानकारी देने तक ही सीमित नहीं रखा गया है। ग्रामीणों के लंबित मामलों को भी सामने लाकर उनके समाधान की पहल की जा रही है। संबंधित विभागों से जुड़ी समस्याओं के बारे में जानकारी लेकर लोगों को आगे की प्रक्रिया समझाई जा रही है। भाजपा नेता श्रुति कुमार अग्रहरी ने कहा कि शिविर का उद्देश्य पात्र लोगों तक सरकारी योजनाओं का लाभ पहुंचाना है। उन्होंने ग्रामीणों से अपील की कि वे शिविर में पहुंचकर अपनी समस्याएं बताएं और जरूरत के अनुसार सहयोग लें, ताकि पात्र परिवार योजनाओं के लाभ से वंचित न रहें। शिविर में भाजपा जिला महामंत्री प्रेम प्रकाश चौधरी, खंड विकास अधिकारी अरुण श्रीवास्तव, प्रधान संघ अध्यक्ष अरविंद सिंह समेत कई जनप्रतिनिधि और कार्यकर्ता मौजूद रहे। अधिकारियों और जनप्रतिनिधियों की मौजूदगी में ग्रामीणों की समस्याएं सुनी गईं। आयोजकों के मुताबिक, पांच दिवसीय सेवा सेतु शिविर 29 सितंबर तक जारी रहेगा।

बारिश और तेज हवा से बिजली व्यवस्था चरमराई

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। लगातार बारिश और तेज हवाओं ने बिजली व्यवस्था को प्रभावित कर दिया है। कई जगह बिजली के खंभे गिरने और तार टूटने से सैकड़ों उपभोक्ताओं की सप्लाई बाधित हो गई। बिजली संकट के बीच दिन निकलते ही 14 फीडर की टीमें प्रभावित इलाकों में पहुंच गईं। बारिश के बीच कर्मचारी खंभों और लाइनों की मरम्मत कर सप्लाई बहाल करने में जुटे हैं। तेज हवाओं के कारण कई स्थानों पर बिजली के खंभे गिर गए। कुछ जगह तार टूटने से लाइनें भी क्षतिग्रस्त हो गईं। इसके चलते सैकड़ों उपभोक्ताओं के घरों और प्रतिष्ठानों में बिजली आपूर्ति बंद हो गई। खराब मौसम के बीच विभाग के सामने लाइनों को दुरुस्त करने की चुनौती बनी हुई है। दिन निकलते ही 14 फीडर के बिजली कर्मचारी प्रभावित क्षेत्रों में पहुंच गए। टीमों ने गिरे हुए खंभों को ठीक करने और टूटे तारों को जोड़ने का काम शुरू किया। लगातार बारिश के बावजूद कर्मचारी फॉल्ट तलाशने और क्षतिग्रस्त लाइनों की मरम्मत में जुटे रहे। बिजली सप्लाई बाधित होने से उपभोक्ताओं को घरेलू कामकाज में परेशानी हो रही है। वहीं दुकानदारों और अन्य कारोबारियों का काम भी प्रभावित हुआ है। बिजली घर निर्भर कॉमन सर्विस सेंटर (सीएससी) और मोबाइल कारोबार से जुड़े लोगों को विशेष दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। बिजली कर्मचारियों के मुताबिक लगातार बारिश और तेज हवा के कारण मरम्मत कार्य में परेशानी आ रही है। इसके बावजूद अलग–अलग टीमें लगातार प्रभावित क्षेत्रों में काम कर रही हैं। जहां खंभे और तार क्षतिग्रस्त हुए हैं, वहां प्राथमिकता के आधार पर मरम्मत की जा रही है। विभागीय कर्मचारियों के अनुसार खंभों और तारों की मरम्मत पूरी होने के बाद प्रभावित इलाकों में बिजली आपूर्ति धीरे–धीरे बहाल की जाएगी। टीमें फॉल्ट ठीक करने के साथ लाइनों की जांच भी कर रही हैं, ताकि मरम्मत के बाद सुरक्षित तरीके से सप्लाई शुरू की जा सके।

सीट बंटवारे में सपा–कांग्रेस की बयानबाजी पर बोले अखिलेश–ये हमारी रणनीति का हिस्सा

लखनऊ (आभा)। यूपी चुनाव की तैयारियों में जुटी सपा और कांग्रेस के बीच गठबंधन और सीट बंटवारे को लेकर चल रही सियासी खींचतान और बयानबाजी के बीच सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने बड़ा बयान दिया है। उन्होंने कहा कि ये हमारी रणनीति का हिस्सा है। दरअसल कांग्रेस के गढ़ रायबरेली में सपा की पीडीए रथ यात्रा को लेकर सवाल पूछा गया कि यूपी कांग्रेस के अध्यक्ष अजय राय ने सैफई और इटावा में भी कांग्रेस की रैली की बता कही है। जिस पर सपा अध्यक्ष ने कहा कि कि 'हम लोग कभी–कभी विरोधियों से भी सीखते हैं। सत्ता पक्ष हमारे विपक्ष के लोग हैं। आप देखते होंगे ऊपर–ऊपर वो भी लड़ रहे हैं। अंदर–अंदर मिले हुए हैं। हमें भी तो विरोधियों से कुछ सीखना चाहिए। दूसरे दलों में जो ऊपरी लड़ाई चल रही है। वो दिखावा है, हमारी लड़ाई भी रणनीति का हिस्सा है'।

लखनऊ में सपा कार्यालय में प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने इलेक्शन कमीशन पर चुनाव में गड़बड़ी के आरोप लगाए। उन्होंने दावा किया कि भाजपा के लोगों ने गांव–गांव से वोट कटवाने के लिए बड़ी संख्या में फॉर्म–7 भरकर भेजे। अखिलेश ने कहा कि लखनऊ में एक व्यक्ति ने 100 से अधिक वोट कटवाने के लिए फॉर्म–7 भरे, जबकि उनके मुताबिक एक व्यक्ति अधिकतम पांच लोगों के खिलाफ ही यह फॉर्म जमा कर सकता है। उन्होंने आरोप लगाया कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ चुनावी गड़बड़ी के मामले में आयोग का बचाव कर रहे हैं।

रविवार को भी खुले रहे बैंक

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। रविवार को छुट्टी होने के बावजूद सरकारी बैंक खुले। सोमवार से से बुधवार तक बैंक बंद रहेंगे। बैंक कर्मचारी हफ्ते में 2 दिन छुट्टी की मांग को लेकर अगले 3 दिन हड़ताल करेंगे। रविवार को आम लोगों के लिए बैंक खुलने का मौका 10 साल बाद आया था। इससे पहले, 2016 में नोटबंदी के बाद 14 नवंबर को रविवार के दिन बैंक खुले थे। तब पुराने 500 और 1000 के नोट बदलने, जमा करने और कैश निकालने के लिए लोग बैंकों में लाइन में लगे थे। भीड़ संभालने के लिए सरकार ने रविवार को भी बैंक खोलने का फैसला लिया था।

पंडित ज्वाला प्रसाद मिश्रा के निधन से संगीत जगत में शोक की लहर

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। पंडित ज्वाला प्रसाद मिश्रा संगीत में तान कप्तान के नाम से जाने जाने वाले संगीत पुरोधा के देहावसान से संगीत जगत को अत्यधिक क्षति पहुंची है।'

रविवार को पंडित ज्वाला प्रसाद संगीत सेवा संस्थान पर आयोजित शोक सभा में संगीत शिक्षक राजेश कुमार आर्य, सचिव संतोष श्रीवास्तव तथा प्रबंधक विनोद कुमार उपाध्याय ने दुख व्यक्त करते हुए कहा कि पंडित ज्वाला प्रसाद जी का जाना संगीत जगत के लिए अपूरणीय क्षति है। उन्होंने अपना पूरा जीवन शास्त्रीय संगीत की सेवा और नई पीढ़ी को संगीत की शिक्षा देने में समर्पित कर दिया। तान कप्तान के नाम से वे केवल बस्ती ही नहीं, बल्कि पूरे पूर्वांचल में लोकप्रिय थे। उनके द्वारा स्थापित संगीत परंपरा को संस्थान सदैव आगे बढ़ाता रहेगा। शोक सभा में दो मिनट का मौन रखकर दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की गई।

इस अवसर पर संस्थान के छात्र एवं छात्राएं में अपर्णा श्रीवास्तव, रीना पाठक, अनिकेत पांडे, आकर्ष शुक्ला, प्रिंस शर्मा, नितेश, प्रमोद आदि मौजूद रहे

कुंआनों उफनायी, अमहट घाट की सीढियां डूबी

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। तीन दिन से लगातार हो रही बारिश के बीच कुआनो नदी का जलस्तर तेजी से बढ़ रहा है। पानी बढ़ने से शहर के अमहट घाट की कई सीढियां डूब गई हैं। इससे घाट पर आने–जाने वाले लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। जिले के कई अन्य इलाकों में भी जलभराव की स्थिति बनी हुई है।

नदी का पानी सामान्य दिनों के मुकाबले काफी ऊपर पहुंच गया है। अमहट घाट पर पानी बढ़ने से कई सीढ़ियां डूब गई हैं। इससे घाट पर आने–जाने वाले लोगों को दिक्कत हो रही है। लगातार बारिश के कारण नदी का जलस्तर और बढ़ने की आशंका बनी हुई है।

बस्ती में पिछले तीन दिनों से लगातार बारिश हो रही है। इसका असर नदियों के जलस्तर के साथ शहर और ग्रामीण इलाकों में भी दिखाई दे रहा है। कई जगह पानी जमा होने से लोगों को आवागमन में परेशानी हो रही है।बारिश जारी रहने से कुआनो नदी के जलस्तर में और बढ़ोतरी की संभावना है। नदी किनारे के इलाकों में पानी बढ़ने से स्थिति पर नजर रखी जा रही है। फिलहाल अमहट घाट की सीढ़ियों तक पानी पहुंच चुका है और आसपास के जलभराव वाले क्षेत्रों में भी लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

चन्द्रशेखर ने विचारों और संघर्ष के बल पर राष्ट्रीय राजनीति में अलग पहचान बनाया– राम प्रसाद चौधरी

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

–पूर्व प्रधानमंत्री चन्द्रशेखर के जन्मशती वर्ष पर संगोष्ठी में विमर्श

बस्ती। पूर्व प्रधानमंत्री चन्द्रशेखर की जन्मशती वर्ष के अवसर पर आयोजित समारोह रविवार को गोविन्दराम सक्सेरिया इण्टर कॉलेज के सभागार में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में वक्ताओं ने चन्द्रशेखर के संघर्षपूर्ण जीवन, राजनीतिक यात्रा, समाजवादी विचारधारा और देश के प्रति उनके योगदान को याद किया। कार्यक्रम में मौजूद लोगों ने चन्द्रशेखर के चित्र पर पुष्प अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित किया। चन्द्रशेखर के बाल्यकाल, छात्र जीवन, समाजवादी आन्दोलन से जुड़ाव, राष्ट्रीय राजनीति में उनकी भूमिका और प्रधानमंत्री पद तक पहुंचने के सफर पर विस्तार से चर्चा की गई।

कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए सांसद रामप्रसाद चौधरी ने कहा कि चन्द्रशेखर जी भारतीय राजनीति के ऐसे नेता थे जिन्होंने हमेशा सिद्धांतों और मूल्यों को प्राथमिकता दी। कहा कि चन्द्रशेखर का जीवन संघर्ष, सादगी और जनसेवा का उदाहरण रहा है। उन्होंने किसानों, गरीबों और आम जनता की समस्याओं को मजबूती से उठाया। कहा कि छात्र जीवन से ही चन्द्रशेखर सामाजिक और राजनीतिक आन्दोलनों से जुड़े रहे। उन्होंने अपने विचारों और संघर्ष के बल पर राष्ट्रीय राजनीति में अलग पहचान बनाई। उनका जीवन युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत है।

सांसद रामप्रसाद चौधरी ने कहा कि चन्द्रशेखर ऐसे राजनेता थे, जिन्होंने युवा साथियों के माध्यम से देश को समाजवादी दिशा में ले जाने का प्रयास किया। देश को उबारने के लिहाज से जयप्रकाश नारायण के साथ आकर खड़े हो गए। इसकी कीमत उन्हें जेल में नजरबंदी के रूप में चुकानी पड़ी। इसके बावजूद भी वे झुके नहीं कठिन समाजवाद के प्रति उनकी धारणा और बढ़ गई।

प्रो. राजकुमार जैन ने कहा कि युवा तुर्क के नाम से मशहूर रहे पूर्व प्रधानमंत्री चंद्रशेखर स्पष्टवादिता और निर्भीक निर्णयों के लिए जाने जाते थे। उन्होंने कहा कि देशहित के मुद्दों पर उनकी सोच हमेशा मजबूत रही। उनके राजनीतिक जीवन से सीख लेने की जरूरत है। डॉ. सुनीलम ने कहा कि चन्द्रशेखर जी ने समाज के कमजोर वर्गों की आवाज को मजबूती दी। उनका मानना था कि राजनीति का उद्देश्य जनता की सेवा होना चाहिए।

डॉ. राकेश पाठक ने कहा कि चन्द्रशेखर का व्यक्तित्व संघर्ष और सादगी का प्रतीक था। उन्होंने कहा कि आज के समय में उनके विचार और आदर्श समाज के लिए प्रासंगिक हैं।

प्रो. अरूण त्रिपाठी ने कहा कि चन्द्रशेखर जी ने लोकतांत्रिक मूल्यों को मजबूत करने का काम किया। उन्होंने अपने पूरे राजनीतिक जीवन में जनहित को प्राथमिकता दी। अशोक कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि चन्द्रशेखर जी ने कठिन परिस्थितियों में भी अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं किया। उनका जीवन ईमानदार राजनीति की मिसाल है। कहा कि चन्द्रशेखर जी का राजनीतिक सफर युवाओं के लिए प्रेरणा देता है। उन्होंने समाज और राष्ट्र के हित में हमेशा अपनी आवाज बुलंद की।

डॉ. रघुवंशमणि त्रिपाठी ने कहा कि चन्द्रशेखर जी केवल एक राजनेता नहीं बल्कि एक विचारधारा थे। उनके विचार आने वाली पीढ़ियों को दिशा देते रहेंगे। रमेश कुमार ने कहा कि चन्द्रशेखर जी ने देश की एकता, लोकतांत्रिक व्यवस्था और सामाजिक सरोकारों को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

विधायक महेन्द्रनाथ यादव,पू.र्व विधायक राजमणि पाण्डेय, अरूण कुमार श्रीवास्तव, श्याम जी त्रिपाठी ने कहा कि इंदिरा गांधी की हत्या के बाद राजीव गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस ने लोकसभा में 400 से अधिक सीटें जीती थी। लेकिन राजीव गांधी सरकार पर लगे बोफोर्स घोटाले के आरोपों के बाद 1989 के चुनावों में कांग्रेस सत्ता से बाहर हो गई और जनता दल की सरकार बनी। एक वर्ष के अंतराल में ही भाजपा के समर्थन वापस लेने के कारण वीपी सिंह की सरकार अल्पमत में आ गई और उनकी पार्टी के 64 सांसद अलग हो गए। कांग्रेस के समर्थन से चंद्रशेखर प्रधानमंत्री बन गए। 3 महीने के बाद ही कांग्रेस ने राजीव की जासूसी कराने के आरोप में चंद्रशेखर की पार्टी से समर्थन वापस ले लिया। आदर्शवादी नेता के रूप में पहचान वाले चंद्रेखर 21 जून 1991 को इस्तीफा देना पड़ा। संचालन करते हुये कार्यक्रम संयोजक लोकतंत्र सेनानी डॉ. हरिओम श्रीवास्तव ने कहा कि चन्द्रशेखर जी ने राजनीति में पद से अधिक विचारों को महत्व दिया। उन्होंने कहा कि जन्मशती समारोह का उद्देश्य उनके विचारों और उनके योगदान को नई पीढ़ी तक पहुंचाना है।

कार्यक्रम में आयोजन समिति के सदस्यों रजवंत सिंह, राजकुमार पाण्डेय, अजय कुमार सिंह 'अरुण', अनिल कुमार सिंह, सुभाष नाथ, श्रवण कुमार सिंह, गोपाल जी गौतम, मो. इब्राहिम, प्रहलाद गुप्ता और सिराज अहमद आदि अतिथियों के स्वागत से लेकर कार्यक्रम की अन्य व्यवस्थाओं की जिम्मेदारी संभाला। समिति के सदस्यों ने कहा कि चन्द्रशेखर जी के विचार और सिद्धांत आज भी समाज के लिए प्रेरणादायी हैं। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में चन्द्रशेखर के प्रति श्रद्धा रखने वाले उपस्थित रहे। मुख्य रूप से ब्रजेश मिश्र, अखण्ड प्रताप सिंह के साथ ही बड़ी संख्या में लोग उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में पूर्व नेता प्रतिपक्ष राम गोविन्द चौधरी के निधन पर शोक व्यक्त करते हुये श्रद्धा सुमन अर्पित किया गया।

आंधी, तूफान, बरसात से प्रभावित लोगों की सहायता के कड़े निर्देश

लखनऊ (आभा)। उत्तर प्रदेश में पिछले 48 घंटों से ज्यादा समय से बारिश जारी है। तेज हवाओं और बारिश ने कई जिलों में भारी तबाही मचाई है। कई किसानों की खेतों में खड़ी धान की फसलें बर्बाद हो गई हैं। कई जगहों पर मकान ही गिर गए हैं। जिसको देखते हुए यूपी सरकार ने सभी अफसरों को फील्ड में रहकर पीड़ितों को हर संभव मदद के निर्देश दिए गए हैं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने स्पष्ट निर्देश दिया है कि इस कार्य में लापरवाही बर्दाश्त नहीं किया जायेगा।

राहत आयुक्त डॉ. हृषिकेश भास्कर यशोद ने रविवार को प्रभावित जनपदों के जिलाधिकारियों एवं अपर जिलाधिकारियों से संवाद कर राहत एवं बचाव कार्यों की समीक्षा करते हुए राहत कार्यों को प्रभावी ढंग से संचालित करने के निर्देश दिए। राहुल आयुक्त ने सभी डीएम, एडीएम एवं आपदा विशेषज्ञों को फील्ड में रहकर राहत एवं बचाव कार्यों की प्रभावी निगरानी करने तथा उच्च प्राथमिकता के आधार पर राहत सामग्री एवं सहायता राशि का वितरण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

राहत आयुक्त ने अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए कि राहत एवं बचाव कार्यों में किसी भी स्तर पर लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने जिलाधिकारियों को अतिवृष्टि से प्रभावित परिवारों से व्यक्तिगत रूप से मिलकर उनकी समस्याओं की जानकारी लेने तथा आवश्यक सहायता तत्काल उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। उन्होंने राहत एवं बचाव कार्यों के लिए समय–सीमा निर्धारित करते हुए कार्यवाही सुनिश्चित करने को कहा है।

राहत आयुक्त ने बताया कि 25 सितम्बर से 27 सितम्बर की सुबह तक प्रदेश में 66.5 मिमी वर्षा दर्ज की गई, जबकि इस अवधि में सामान्य वर्षा 7.6 मिमी है। इस प्रकार प्रदेश में वर्षा सामान्य से 775 प्रतिशत अधिक दर्ज की गई। उन्होंने बताया कि प्रदेश के 75 जनपदों में से 56 जनपदों में अत्यधिक वर्षा दर्ज की गई है। उन्होंने बताया कि फर्रूखाबाद में सामान्य से 7385 प्रतिशत, कन्नौज में 5664 प्रतिशत, शाहजहांपुर में 4408 प्रतिशत, हमीरपुर में 4240 प्रतिशत तथा महोबा में 4100 प्रतिशत अधिक वर्षा दर्ज की गई है।

राहत आयुक्त ने बताया कि पिछले 60 घंटों में अतिवृष्टि एवं आंधी–तूफान के कारण प्रदेश में 56 जनहानि, 107 पशुहानि तथा 1021 मकानों के क्षतिग्रस्त होने की सूचना प्राप्त हुई है। इसके अतिरिक्त 46 व्यक्तियों के घायल होने की सूचना है। जनहानि के मामलों में सीतापुर में 7, लखीमपुर खीरी में 5, बहराइच में 5, बलरामपुर में 5, अयोध्या में 4 तथा गोरखपुर में 4 जनहानि की सूचना प्राप्त हुई है। घायलों में हरदोई में 7, मैनपुरी में 5, श्रावस्ती में 5 तथा बाराबंकी में 5, जबकि सीतापुर एवं लखीमपुर खीरी में 3–3 घायल होने की सूचना है। पशुहानि के मामलों में हरदोई में 28, सीतापुर में 16, कन्नौज में 14, बहराइच में 7, कानपुर देहात में 7 तथा उन्नाव में 6 पशुहानि की सूचना प्राप्त हुई है। मकान क्षति के मामलों में हरदोई में 272, सीतापुर में 108, चंदौली में 75, औरैया में 60, गोंडा में 54, हमीरपुर में 51, शाहजहांपुर में 47 तथा बहराइच में 44 मकान क्षतिग्रस्त होने की सूचना है।

राहत आयुक्त ने फसल क्षति का तत्काल सर्वेक्षण एवं आकलन कर नियमानुसार मुआवजा प्रदान करने की कार्यवाही सर्वोच्च प्राथमिकता पर सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि जिन लोगों के मकान क्षतिग्रस्त हुए हैं, उनके लिए आवश्यकता के अनुसार वैकल्पिक आवास की व्यवस्था तत्काल सुनिश्चित की जाए। उन्होंने निर्देश दिए कि जहां आवश्यक हो, पात्र प्रभावित परिवारों को नियमानुसार आवास योजनाओं से लाभान्वित कराने की कार्यवाई की जाए। राहत आयुक्त ने यह भी निर्देश दिए कि जनप्रतिनिधियों को राहत एवं बचाव कार्यों तथा प्रशासन द्वारा की जा रही कार्यवाई से नियमित रूप से अवगत कराया जाए। राहत आयुक्त ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि वर्तमान परिस्थितियों में राहत एवं बचाव कार्यों में त्वरितता, संवेदनशीलता एवं समन्वय के साथ कार्य करते हुए प्रभावित परिवारों को हरसंभव आवश्यक सहायता समय से उपलब्ध कराई जाए।

बिना आपरेशन किए मासूम के पेट से सिक्का व चुम्बक का टुकड़ा निकाल बचायी जान

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। सिक्का व चुंबक का टुकड़ा निगले दो बच्चों का बिना आपरेसन किये ओपेक कैली में तैनात चिकित्सक ने अस्पताल चौराहे के पास निजी अस्पताल टीएन मेमोरियल में कड़ी मेहनत कर बाहर निकाला, इसके बाद बच्चों ने राहत की सांस ली।

संत कबीर नगर जनपद के बाघ नगर थाना क्षेत्र के सिसई माफी गांव के जिकरा पुत्री मो. सहीद ने 10 रुपए के सिक्का निगल ली थी। इसके बाद उसे दर्द होने लगा। उपचार के लिए परिजन चिकित्सकों के पास ले गए लेकिन सभी ने लखनऊ ले जाने की सलाह दी। किसी ने डीएम गैस्ट्रो डा जेपी शुक्ला से उपचार करने की सलाह दी। परिजन बच्ची को लेकर पहुंचे और चिकित्सक ने कड़ी मेहनत कर बाहर निकाला और सभी ने राहत की सांस ली। इसी तरह लालगंज थाना क्षेत्र के महादेव गांव निवासी 6 वर्षीय अरुण पुत्र धर्मेंद्र अग्रहरी ने चुंबक का टुकड़ा पेट में चला गया था। डीएम गैस्ट्रो विभाग के वरिष्ठ चिकित्सक डा जीपी शुक्ला व उनकी टीम ने आधुनिक तकनीकी व विशेष चिकित्सा प्रक्रिया के माध्यम से सिक्के को बाहर निकाला। परिजनों ने उनकी प्रशंसा किये और धन्यवाद दिये।

वरिष्ठ चिकित्सक डा जीपी शुक्ला ने बताया कि यदि समय से बच्चा हमारे पास आ जाए तो बिना आपरेशन किये आसानी से बाहर निकाल देता हूं। दर्जनों बच्चों के पेट से बिना आपरेशन किए सिक्का व अन्य सामान बाहर निकाल चुका हूं।

सफाई कर्मचारी संघ बनकटी का विस्तार मो. कलीम अध्यक्ष, दिलीप कुमार मंत्री बने

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। रविवार को उत्तर प्रदेश पंचायती राज उपखण्ड सफाई कर्मचारी संघ जिला कार्यकारिणी की बैठक अध्यक्ष अजय कुमार आर्य की अध्यक्षता में राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद कार्यालय में सम्पन्न हुई। बैठक में संगठन को मजबूत बनाने और ब्लॉक स्तर पर कार्यकारिणी के गठन को लेकर चर्चा हुई। बैठक के दौरान सर्व सम्मत से विकास खण्ड बनकटी ब्लॉक इकाई के पूर्व अध्यक्ष को संगठन से निष्कासित किए जाने के बाद नई ब्लॉक कार्यकारिणी का गठन किया गया।

बनकटी विकास खण्ड के नई कार्यकारिणी में मो. कलीम को ब्लॉक अध्यक्ष, दिलीप कुमार चौधरी मंत्री, रामदरश कोषाध्यक्ष, धीरेन्द्र कुमार संगठन मंत्री, रामभवन लेखा संपेक्षक तथा सुरेंद्र कुमार यादव को ब्लॉक उपाध्यक्ष की जिम्मेदारी सौंपी गई। पदाधिकारियों को अध्यक्ष अजय कुमार आर्य ने प्रमाण–पत्र देने के साथ ही शपथ ग्रहण कराते हुये संघ के मजबूती और एकजुटता पर जोर दिया।

बैठक में मुख्य रूप से संघ के जिला मंत्री मंसाराम, कोषाध्यक्ष अशोक कुमार चौहान, जिला संगठन मंत्री अमित चकवर्ती, भरत कुमार यादव, राजेश कुमार, राजकुमार, दीनानाथ, राज बहादुर, ओम प्रकाश, राम सुरेश, राम शब्द, कमलेश कुमार, रामकवल यादव, शम्भूनाथ, सुशील कुमार आदि शामिल रहे।

"मुझे अखबार निकालने दो तो मैं इस बात की परवाह नहीं करता कि कौन धर्म का नियामक है और कौन कानून का निर्माता"—वेंडेल फिलिप्स

दैनिक
भारतीय बस्ती
बस्ती 28 सितम्बर 2026 सोमवार

सम्पादकीय

दवा के नाम पर डकैती

दवाओं और मेडिकल उपकरणों की लागत और कीमत में भारी अंतर से जुड़े एक मामले की सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने जो टिप्पणी की है, उसके गहरे निहितार्थ हैं। कोर्ट ने कहा है कि 2,700 रुपये में खरीदी गई दवा को 27,000 रुपये में बेचने की इजाजत देना 'जबरिया वसूली' या 'दिन–दहाड़े डकैती' के बराबर है। किसी भी वस्तु की कीमत दे दो पहलू होते हैं– 'पीटीआर' और 'एमआरपी'। पीटीआर वह कीमत है, जिस पर निर्माता कंपनी रिटेलर को कोई वस्तु या दवा उपलब्ध कराती है और ग्राहकों से जो अधिकतम कीमत रिटेलर वसूलता है, वह एमआरपी कहलाती है। हमारे यहां सन् 1997 में गठित 'नेशनल फार्मास्युटिकल प्राइसिंग अथॉरिटी' (एनपीपीए) दवाओं की कीमत नियंत्रित करने वाली केंद्रीय नियामक संस्था है। 'ड्रग प्राइस कंट्रोल ऑर्डर' (डीपीसीओ) के जरिये वह नियमित रूप से दवाओं और उनके अधिकतम खुदरा मूल्य की सूची जारी करती है। यह सुनिश्चित करना उसकी ही जिम्मेदारी है कि दवाएं लोगों को किफायती कीमत पर मिलें। पूर्व में एनपीपीए के पास दर्ज कराई गई कुछ शिकायतों की जांच से यह पता चला कि संबंधित कॉरपोरेट अस्पतालों ने एक खास उपकरण पर 1,737 प्रतिशत का मुनाफा कमाया था! 'नेशनल एसेंशियल लिस्ट ऑफ मेडिसिन्स' (एनईएलएम) में शामिल 800 दवाओं के एक विश्लेषण में यह पाया गया था कि अस्पताल और डॉक्टर अक्सर ऐसी दवाओं के 'कॉम्बिनेशन' लिखते थे, जो कीमत–नियंत्रण के दायरे से बाहर होती हैं। अध्ययन में देखा गया कि नई दवाओं और 'फिक्स्ड–डोज कॉम्बिनेशन' की वजह से दवा निर्माता कीमत–नियंत्रण के नियमों से बाहर रह जाते थे।

डीपीसीओ 2013 के तहत गैर–सूचीबद्ध दवाओं की शुरुआती कीमत तय करने के बारे में कोई नियम नहीं है। डीपीसीओ सूची में शामिल लगभग 1,000 दवाओं के लिए अधिकतम कीमत तय करता है। गैर–सूचीबद्ध दवाएं सरकार की जरूरी दवाओं की सूची या सख्त कीमत–नियंत्रण वाली सूची में शामिल नहीं होती हैं। अलबत्ता, इनमें यह शर्त अवश्य होती है कि निर्माता बाद में उस कीमत को 10 प्रतिशत से अधिक नहीं बढ़ा सकते। सुप्रीम कोर्ट को दी गई जानकारी के अनुसार, लगभग 82 फीसदी दवाएं गैर–सूचीबद्ध श्रेणी में आती हैं और बाजार में इनके लगभग 60,000 ब्रांड मौजूद हैंय कीमत तय करने का नियम लगभग 5,000 ब्रांड पर लागू होता है। हालांकि, आपात स्थिति में सरकार अपेक्षित अवधि तक किसी दवा का अधिकतम मूल्य तय कर सकती है।

बहरहाल, सवाल यह है कि खरीदारों और विक्रेताओं, दोनों के लिए 'सही कीमत' क्या है? 78 देशों के 1,500 मरीज समूहों के एक ग्लोबल सर्वे में सिर्फ नौ फीसदी लोगों ने माना घ्ध्या कि दवा कंपनियां 'सही कीमत वाली नीतियां' अपनाने में ईमानदार हैं। साल 2011 से आज तक यह धारणा 11 से 15 फीसदी के बीच ही रही है। निस्संदेह, दवाएं रोजमर्रा के सामान जैसी नहीं होतीं और इनकी कीमतें समाज की जरूरतों के हिसाब से होनी चाहिए। कीमत से जुड़े मुद्दे विक्रेताओं और खरीदारों, दोनों पर लागू होते हैं और निष्पक्षता का सिद्धांत भी दोनों पर लागू होता है।

बेचने वालों में शोध एवं विकास (आरऐंडडी) क्षेत्र के डेवलपर आते हैं। इनमें अकादमिक व सरकारी प्रयोगशालाएं, प्री–क्लिनिकल और क्लिनिकल ट्रायल करने वाली छोटी कंपनियां, नियामक मंजूरी के जरिये दवाएं बनाने वाली बड़ी कंपनियां और फॉर्मूलेशन में बदलाव करने वाली जेनेरिक कंपनियां शामिल हैं। थोक निर्माता दवा विकसित करने वाले हो भी सकते हैं और नहीं भी, जबकि वितरक निर्माता से मरीज और मेडिकल संस्थानों तक दवाएं पहुंचाते हैं। इनके अलावा बड़े ऑनलाइन और अनौपचारिक सेक्टर भी हैं। खरीदारों में परिवार, बीमा कंपनियां, मंत्रालय और क्लिनिकल संस्थान शामिल हैं। दवाओं के कीमत–निर्धारण में शोध एवं विकास, निर्माण, वितरण लागत और उचित मुनाफे को शामिल किया जाना चाहिए। दवा की कीमत खरीदार की क्रय–क्षमता के भीतर दवा की 'वैल्यू' के हिसाब से होनी चाहिए, तभी सभी पक्षों के साथ इंसाफ हो सकेगा।

पहचान का संकट

आधुनिक दौर में नागरिक की पहचान केवल नाम और चेहरे तक सीमित नहीं रह गई है। जन्म प्रमाणपत्र से लेकर आधार, मतदाता पहचानपत्र, पासपोर्ट, बैंक खाते, मोबाइल नंबर, स्थायी निवास, शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक सुरक्षा योजनाओं तक जीवन के लगभग हर महत्त्वपूर्ण पड़ाव पर किसी न किसी दस्तावेज की जरूरत पड़ती है। इनका उद्देश्य नागरिक और राज्य के बीच भरोसेमंद पहचान स्थापित करना है। मगर जब एक ही व्यक्ति की अलग–अलग संस्थाओं में दर्ज सूचनाओं में मामूली अंतर रह जाता है, तो यही व्यवस्था सुविधा के बजाय परेशानी का कारण बनने लगती है। समस्या दस्तावेज की संख्या भर नहीं है।

असली कठिनाई उनके बीच समन्वय, जिम्मेदारी और सुधार की प्रक्रिया को लेकर है। किसी प्रमाणपत्र में नाम की वर्तनी, जन्मतिथि, पते या अन्य विवरण में त्रुटि हो जाए, तो नागरिक को अक्सर संबंधित कार्यालय, पोर्टल या सेवा केंद्र के बीच चक्कर लगाने पड़ते हैं। एक दस्तावेज में सुधार के लिए दूसरे दस्तावेज की मांग की जाती है और दूसरे में सुधार के लिए पहले प्रमाणपत्र का सहारा लेना पड़ सकता है। ऐसे में नागरिक एक ऐसे दुश्चक्र में फंस जाता है, जिसका हल उसके हाथ में नहीं होता।

डिजिटल प्रणाली के जरिए इस जटिल स्थिति को कई स्तरों पर सरल बनाने का प्रयास किया गया है, लेकिन यह भी सच है कि डिजिटल होने भर से प्रक्रिया नागरिक–केंद्रित नहीं हो जाती। जन सेवा केंद्रों और ऑनलाइन पोर्टलों ने आवेदन तथा दस्तावेज जमा करने की सुविधा बढ़ाई है, पर अंतिम सत्यापन और निर्णय का अधिकार अलग–अलग विभागों के पास बना हुआ है।

इसका अर्थ यह है कि नागरिक को एक ही सूचना बार–बार अलग संस्थाओं के सामने सिद्ध करनी पड़ सकती है। तकनीक का लाभ तभी व्यापक होगा, जब विभागीय डेटाबेस के बीच सुरक्षित और स्पष्ट समन्वय के साथ त्रुटि–सुधार की जिम्मेदारी भी तय हो। आधार एक विशिष्ट पहचान संख्या है, जिसका उपयोग अनेक सेवाओं में पहचान के सत्यापन के लिए किया जाता है। बैंक खातों और मोबाइल सेवाओं से जुड़े विवरणों में आधार का इस्तेमाल व्यापक है।

ऐसे में आधार या उससे जुड़े रिकॉर्ड में नाम, जन्मतिथि, मोबाइल नंबर अथवा अन्य सूचना की गड़बड़ी का असर दूसरी सेवाओं पर पड़ सकता है। प्रश्न यह है कि गलती हुई कहां है। यदि त्रुटि किसी विभागीय रिकॉर्ड में हुई है, तो उसके सुधार का पूरा बोझ नागरिक पर डालना प्रशासन की न्यायसंगत भावना के अनुरूप नहीं माना जा सकता। नागरिक से आवश्यक प्रमाण मांगना अलग बात है, लेकिन विभागों के पास उपलब्ध प्रमाणों और अभिलेखों का परस्पर सत्यापन करना व्यवस्था की जिम्मेदारी होनी चाहिए।

सार्वजनिक विश्वविद्यालयों का अस्तित्व जरूरी

अविजित पाठक

उच्च शिक्षा का लक्ष्य आज्ञाकारी नागरिकों को फैक्टरी की तरह तैयार करने तक सीमित नहीं होना चाहिए। लोकतंत्र के लिए सार्वजनिक विश्वविद्यालयों का अस्तित्व जरूरी है। जहां विद्यार्थियों में लोकतांत्रिक मूल्यों, विविधता, सहिष्णुता और आलोचनात्मक सोच का विकास होता है। वहीं राजनीतिक दखल, शिक्षा का बाजारीकरण और निजीकरण ऐसे संस्थानों के लिए नुकसानदेह हैं। असहिष्णुता के इस दौर में, परेशान करने वाला ख्याल मेरे मन में आ रहा है। क्या राजनीतिक प्रतिष्ठान को अब बौद्धिक रूप से जीवंत और शैक्षणिक रूप से समृद्ध, समावेशी सरकारी विश्वविद्यालयों की अहमियत और अधिक महसूस नहीं हो रही? अन्यथा, हमारे कुछ प्रमुख सरकारी विश्वविद्यालयों पर लगातार हो रहे हमलों को कैसे लिया जाए? मसलन, जाधवपुर यूनिवर्सिटी का हालिया उथल–पुथल भरा घटनाक्रम

ऐसा लगता है कि बंगाल की बीजेपी सरकार इस विश्वविद्यालय के राजनीतिक–सांस्कृतिक माहौल से खघस तौर पर खफ़्श नहीं। इसमें हैरानी की बात नहीं कि अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद और वामपंथी छात्र समूहों के बीच तनाव के बाद हिंसक झड़पें और आधी रात को तोड़–फोड़ होते हमें देखने को मिली। हमने भगवा मार्च और यूनिवर्सिटी गेट के सामने नागा साधुओं की मौजूदगी भी देखी। क्या अपनी खघस शारीरिक भंगिमाओं से ये साधु उन छात्रों और शिक्षकों को कोई संदेश देने की कोशिश कर रहे हैं, जिन्हें राजनीतिक व्यवस्था समस्याग्रस्त या अनैतिक असहमति रखने वाला मानती है?

वास्तव में, हालिया समय में हमारे प्रमुख सरकारी विश्वविद्यालयों पर हो रहे इस प्रकार के हमलों का कोई अंत नहीं दिख रहा है– जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी से लेकर टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज तकय या जामिया मिलिया इस्लामिया से लेकर दिल्ली यूनिवर्सिटी तक। टकराव नाना रूप धर कर सामने आ रहे – कुलपति नियुक्ति के तरीके से लेकर ज्ञान की नई राजनीति तक –वह जिसे 'भारतीय ज्ञान प्रणाली' कहा जा रहा है – ऐसा होने देकर आलोचनात्मक सोच व शैक्षणिक आजादी के माहौल को खघस्म करने तक। हो सकता है हमारे प्रमुख सार्वजनिक विश्वविद्यालयों का सुनियोजित पतन एक नए कारोबार के बढ़ने का आधार भी बना रहा हो–तेजी से बढ़ रहे निजी विश्वविद्यालयों के जरिए शिक्षा का बाजारीकरण (यानी शिक्षा को बिकाऊ चीज बनाना)।

भले ही नव–उदारवाद के समर्थक – या वे लोग जो मुनाफे की समान सोच के साथ शिक्षा को भी पॉपकॉर्न की भांति बेचते हैं – हमारे बेहतरीन सार्वजनिक विश्वविद्यालयों के गिरते मूल्य पर आंसू न बहाएं, लेकिन वे सभी लोग, जिनकी जिंदगी इन संस्थानों की वजह से बदली है, उन्हें आगे आना चाहिए और अपनी आवाज उठानी चाहिए। निजी तौर पर मैं सदा दो बेहतरीन सार्वजनिक शैक्षणिक संस्थानों का आभारी रहूंगा – कोलकाता का प्रेसीडेंसी कॉलेज और दिल्ली की जेएनयू।

लेखक के मुताबिक– मैं अच्छे प्रोफेसरों, एक जीवंत शैक्षणिक संस्कृति, सार्थक बहस, संवाद एवं राजनीतिक मंथन के अनुकूल माहौल में और, सबसे बढ़कर, सामाजिक विविधता के समृद्ध अनुभव से पल्लवित होकर बड़ा हुआ हूं। लगता है कि वहां विशेषज्ञतापूर्ण अकादमिक ज्ञान अर्जित करने के अलावा, मैंने तीन जरूरी बातें सीखीं, जो मेरे हिसाब से एक लोकतांत्रिक, समावेशी व काफी हद तक बराबरी वाले समाज के विकास के लिए जरूरी हैं। सर्वप्रथम, मैंने (लेखक) अनेकता और मिल–जुलकर रहने की भावना को समझा। एक तमिल लड़का, एक मिजो लड़की, बिहार के दूर–दराज इलाके से आए एक दलित छात्र या केरल की एक होनहार मुस्लिम छात्रा के साथ बड़े होने के दौरान, मैंने दूसरों की भावनाओं को समझने (सहानुभूति), अलग–अलग संस्कृतियों के बीच संवाद बनाने और, सबसे बढ़कर, यह समझने की संवेदनशीलता सीखी कि भारतीय होने का असल मतलब अनिवार्य रूप से हमारी गौरवशाली अनेकता और विविधता के बीच दूसरों की बातों को गहराई से सुनने की कला विकसित करना है। कदाचित, एक बेहतरीन सार्वजनिक यूनिवर्सिटी का यह अनकहा सबक ही हमें धार्मिक कट्टरपंथ, विदेशियों के प्रति नफरत रखने वाली राष्ट्रवादी सोच और संकीर्ण पहचान की राजनीति को हमेशा शक की नजर से देखने के काबिल बना गया।

दूसरी बात, मैंने सीखा कि नव–उदारवाद या बाजार–केंद्रित मूलभूत सोच की भी अपनी सीमाएं होती हैं। हर चीज बिकाऊ नहीं होती। शिक्षा का अधिकार किसी एक वर्ग–विशेष का हक और आर्थिक पूंजी पर निर्भर नहीं होना चाहिए। किफायती और अच्छी गुणवत्ता वाले सरकारी विश्वविद्यालय के बिना, हम उस बुराई का विरोध नहीं कर पाएंगे, जो सदियों से चली आ रही है – यानी सामाजिक एवं आर्थिक असमानता का लगातार बने रहना। कई बार मुझे लगता है कि मैं कफ्स्मित वाला था कि मेरे बड़े होने के दौरान बढ़िया सरकारी विश्वविद्यालय मौजूद थेय वर्ना, मेरे माता–पिता के लिए मुझे बहुत महंगे और बाजारीकृत 'फाइव–स्टार' निजी विश्वविद्यालयों में भेजना और हर साल लगभग 13 लाख रुपये का इंतजाम करना नामुमकिन होता!

और तीसरी बात, मैंने सीखा कि लोकतंत्र समय–समय पर चुनाव करवाए जाने की रस्म–अदायगी भर नहीं है। सोचने, काम करने और जीने के तरीके वाला लोकतंत्र बनाने के लिए आलोचनात्मक सोच की भावना होना जरूरी है– यानी हमारे चुने हुए प्रतिनिधि जो करते हैं, या वे जिन आर्थिक और सांस्कृतिक नीतियों को बढ़ावा देते हैं, उनके असर को परखने और समझने की क्षमता होना। लोकतंत्र का मतलब विरोध की संस्कृति या प्रतिरोध की कला भी है। हम यह कैसे भूल सकते हैं कि इसी प्रतिरोध की संस्कृति के जरिए ही हम नस्लवाद, रंगभेद, उपनिवेशवाद, जातिवाद, छुआछूत, गरीबी, पितृसत्ता, धार्मिक कट्टरपंथ और फासीवाद से आगे बढ़ पाए हैं?

इसलिए, एक बढ़िया विश्वविद्यालय में, जब युवा छात्र नेल्सन मंडेला, ज्योतिराव फुले, सिमोन द बोउवार, मोहनदास करमचंद गांधी और रचनात्मक असहमति रखने वाले कई अन्यों के बारे में पढ़ते हैं, या पॉल रॉबसन को याद करते हुए 'वी शैल ओवरकम...' (हम होंगे कामयाब...) गाते हैं, तो यह सिर्फ उनके अकादमिक ज्ञान को बढ़ाने के लिए नहीं होता, असल में, इस प्रकार का बौद्धिक एवं सांस्कृतिक जुड़ाव उन्हें सशक्त बनाता है और लोकतंत्र के प्रति प्रतिबद्ध, बौद्धिक रूप से जागरूक और राजनीतिक रूप से सतर्क नागरिकों के तौर पर जीने के लिए प्रेरित करता है।

यह एक जरूरी सबक है, खघसकर तब जब बाजार–केंद्रित सोच रखने वाली और हावी हुई विचारधारा शिक्षा की कीमत को केवल 'नौकरी और तनख्घ्वाह' के नजरिए से मापती हो। इसकी बजाय, आलोचनात्मक सोच और आजादी–पसंद राजनीति के इस पहलू पर बार–बार जोर दिया जाना चाहिए, खघसकर तब जब सामाजिक रूढ़िवाद का एक नया रूप (जो उग्र धार्मिक राष्ट्रवाद की विचारधारा की खघसियत लिए है) असहमति रखने वाले हर व्यक्ति को 'दिमागी नक्सल' या 'टुकड़े–टुकड़े गैंग' का सदस्य ठहराकर बदनाम करता हो!

यह कहने में मुझे कोई हिचकिचाहट नहीं है कि एक लोकतांत्रिक समाज के लिए बढ़िया एवं उदार सार्वजनिक विश्वविद्यालयों की जरूरत होती है। आखघिरकार, उच्च शिक्षा का मकघ्सद केवल ऐसे आज्ञाकारी नागरिक तैयार करना भर नहीं है, जो मानो किसी फैक्टरी में ढले हों, या जो केवल टेक्नो–कॉरपोरेट साम्राज्य के लिए 'तकनीकी कुशल कार्यबल' तैयार करती हो। विश्वविद्यालय ऐसे जागरूक नागरिक भी तैयार करे, जिनकी आंखों में अभी भी एक न्यायपूर्ण और मानवीय दुनिया का सपना हो।—लेखक समाजशास्त्री हैं।

टकराव के बीच अमेरिका- चीन कूटनीतिक समझौते

—सौरभ वाष्णेय—

विश्व राजनीति में अमेरिका और चीन के संबंध इस समय एक ऐसे दौर से गुजर रहे हैं, जहां टकराव और संवाद दोनों साथ–साथ दिखाई दे रहे हैं। एक ओर दोनों देश व्यापार, तकनीक, ताइवान, दुर्लभ खनिज, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और वैश्विक प्रभाव के विस्तार को लेकर एक–दूसरे के सामने खड़े हैं, तो दूसरी ओर आर्थिक हित उन्हें बातचीत की मेज पर भी ला रहे हैं। यही विरोधाभास आज के बदलते वैश्विक शक्ति संतुलन की सबसे बड़ी तस्वीर है। अमेरिका और चीन की हालिया नजदीकी को केवल मित्रता के रूप में देखना जितना गलत होगा, उतना ही इसे महज दिखावटी कूटनीति मान लेना भी उचित नहीं होगा। वास्तविकता यह है कि दोनों महाशक्तियां यह समझ रही हैं कि लगातार बढ़ता टकराव किसी एक पक्ष के हित में नहीं है। दुनिया की दो सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के बीच व्यापारिक तनाव बढ़ने का असर केवल वाशिंगटन और बीजिंग तक सीमित नहीं रहता, बल्कि उसका प्रभाव पूरी वैश्विक अर्थव्यवस्था, आपूर्ति शृंखलाओं, निवेश और विकास की गति पर पड़ता है।

यही कारण है कि तीखे बयानों और रणनीतिक प्रतिस्पर्धा के बावजूद संवाद के दरवाजे खुले रखे जा रहे हैं। अमेरिका अपनी आर्थिक और तकनीकी बढ़त को सुरक्षित रखना चाहता है, जबकि चीन अपने औद्योगिक विस्तार, निर्यात बाजार और तकनीकी विकास के लिए स्थिर अंतरराष्ट्रीय वातावरण चाहता है। दोनों के हितों में टकराव है, लेकिन उनकी आर्थिक आवश्यकताएं उन्हें एक–दूसरे से पूरी तरह अलग होने की अनुमति नहीं देतीं।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आज अमेरिका और चीन की प्रतिस्पर्धा केवल व्यापार तक सीमित नहीं रह गई है। तकनीक इस संघर्ष का नया केंद्र बन चुकी है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, सेमीकंडक्टर, दूरसंचार, इलेक्ट्रिक वाहन, उन्नत विनिर्माण और दुर्लभ खनिज जैसे क्षेत्र अब आर्थिक विकास के साथ–साथ राष्ट्रीय सुरक्षा से भी जुड़े हुए हैं। अमेरिका चीन की तकनीकी क्षमता और औद्योगिक विस्तार को लेकर सतर्क है, वहीं चीन अमेरिकी तकनीकी प्रतिबंधों को अपने विकास के रास्ते में बाधा के रूप में देखता है।

इसके बावजूद दोनों देशों के बीच बातचीत का जारी रहना अपने आप में महत्वपूर्ण है। इसका अर्थ यह नहीं कि दोनों के बीच रणनीतिक अविश्वास समाप्त हो गया है। बल्कि इसका अर्थ यह है कि दोनों देश अपने मतभेदों को नियंत्रित रखने और उन क्षेत्रों में समझ बनाने की कोशिश कर रहे हैं जहां परस्पर हित जुड़े हुए हैं।

ताइवान का मुद्दा इस रिश्ते की सबसे संवेदनशील परीक्षा है। व्यापार और आर्थिक मामलों में समझ विकसित हो सकती है, लेकिन ताइवान को लेकर अमेरिका और चीन की रणनीतिक सोच में मूलभूत अंतर मौजूद है। इसी तरह दक्षिण चीन सागर, तकनीकी प्रतिस्पर्धा और वैश्विक प्रभाव के विस्तार को लेकर भी दोनों देशों के बीच मतभेद आसानी से समाप्त होने वाले नहीं हैं। इसलिए वर्तमान नजदीकी को स्थायी दोस्ती की शुरुआत मानना जल्दबाजी होगी।

असल में अमेरिका और चीन के संबंधों में एक नई तरह की कूटनीति दिखाई दे रही है । प्रतिस्पर्धा के साथ सह–अस्तित्व की कूटनीति। दोनों देश एक–दूसरे के प्रभाव को सीमित करना चाहते हैं, लेकिन पूर्ण टकराव से भी बचना चाहते हैं। वे व्यापार करना चाहते हैं, लेकिन रणनीतिक निर्भरता कम करना चाहते हैं। वे संवाद चाहते हैं, लेकिन अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा और तकनीकी हितों से समझौता करने के लिए तैयार नहीं हैं।यही स्थिति आने वाले समय की विश्व राजनीति को भी प्रभावित करेगी। यदि अमेरिका और चीन के बीच व्यापारिक तनाव नियंत्रित रहता है तो वैश्विक बाजारों को कुछ स्थिरता मिल सकती है। इसके विपरीत यदि शुल्क युद्ध फिर तेज होता है तो उसका असर विकासशील देशों पर भी पड़ेगा। महंगाई, आपूर्ति शृंखला और निर्यात बाजारों में अस्थिरता बढ़ सकती है।

भारत के लिए इस बदलते समीकरण को समझना विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। भारत अमेरिका के साथ रणनीतिक और आर्थिक संबंधों को आगे बढ़ा रहा है, वहीं चीन भारत का पड़ोसी और एक महत्वपूर्ण व्यापारिक साझेदार है। ऐसे में भारत के लिए किसी एक शक्ति–गुट का हिस्सा बनने के बजाय अपने राष्ट्रीय हितों के आधार पर संतुलित और स्वतंत्र विदेश नीति को आगे बढ़ाना अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है।

अमेरिका और चीन के बीच यदि तनाव कम होता है तो भारत के लिए वैश्विक आर्थिक स्थिरता का वातावरण बन सकता है। वहीं यदि दोनों देशों के बीच प्रतिस्पर्धा बनी रहती है तो भारत के सामने विनिर्माण, आपूर्ति शृंखला और निवेश के क्षेत्र में अवसर भी पैदा हो सकते हैं। लेकिन इन अवसरों को हासिल करने के लिए भारत को अपनी उत्पादन क्षमता, तकनीकी दक्षता और निर्यात प्रतिस्पर्धा को मजबूत करना होगा।

सबसे बड़ा सवाल यह है कि अमेरिका और चीन की यह नजदीकी कितने समय तक टिकती है। क्या यह वास्तविक समझ की दिशा में कदम है या केवल तत्काल आर्थिक दबावों को कम करने की रणनीति? इसका उत्तर आने वाला समय देगा। दोनों देशों के बीच कई ऐसे मुद्दे हैं जिन पर सहमति बनना आसान नहीं है। इसलिए किसी एक बैठक या अस्थायी समझौते को स्थायी परिवर्तन का संकेत मानना उचित नहीं होगा।

फिर भी एक बात स्पष्ट है आज की दुनिया में महाशक्तियां भी एक–दूसरे से पूरी तरह कटकर नहीं चल सकतीं। आर्थिक परस्पर निर्भरता, वैश्विक व्यापार, तकनीकी विकास और साझा चुनौतियां उन्हें संवाद के लिए मजबूर करती हैं। यही कारण है कि अमेरिका और चीन के बीच टकराव के बावजूद बातचीत का सिलसिला जारी है।

अमेरिका और चीन की वर्तमान नजदीकी का सबसे बड़ा संदेश यही है कि विश्व राजनीति अब केवल शक्ति प्रदर्शन से नहीं, बल्कि शक्ति और आवश्यकता के संतुलन से संचालित हो रही है।दोनों देश प्रतिस्पर्धा तो हैं, लेकिन एक–दूसरे की आर्थिक और वैश्विक भूमिका की अनदेखी नहीं कर सकते। इसलिए इस नजदीकी को दोस्ती या दुश्मनी के पुराने पैमाने पर देखने के बजाय बदलती विश्व व्यवस्था के संकेत के रूप में समझना चाहिए। आने वाले वर्षों में अमेरिका और चीन के बीच संबंधों का स्वरूप वैश्विक राजनीति की दिशा तय करने वाले प्रमुख कारकों में रहेगा। भारत के लिए चुनौती यह होगी कि वह इस बदलते समीकरण में अपनी रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखते हुए आर्थिक और कूटनीतिक अवसरों का अधिकतम लाभ उठाए।

अमेरिका और चीन की नजदीकी इसलिए केवल दो देशों के रिश्तों की कहानी नहीं है। यह बदलती विश्व व्यवस्था की कहानी है . जहां प्रतिद्वंद्विता खत्म नहीं हुई है, लेकिन टकराव को नियंत्रित करने की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक बढ़ गई है।

भू–जल के क्षरण का खतरा

—डॉ. प्रियंका सौरभ—

भारत की कृषि उपलब्धियों की चमक के पीछे एक गंभीर सच्चाई छिपी है भूजल का तेजी से ह्रास। देश की सिंचाई का 78 प्रतिशत से अधिक हिस्सा भूजल पर निर्भर है और कृषि क्षेत्र भूजल निकासी का लगभग 90 प्रतिशत हिस्सा अपने पास समेटे हुए है। पंजाब, हरियाणा और राजस्थान जैसे कृषि प्रधान राज्यों में भूजल निकासी वार्षिक रीचार्ज से कहीं अधिक हो गई हैय पंजाब में तो यह दर 152 प्रतिशत तक पहुँच गई है। यह स्थिति न केवल दीर्घकालिक कृषि स्थिरता को खतरे में डाल रही है, बल्कि ग्रामीण असमानता, ऊर्जा की बढ़ती मांग और पारिस्थितिकी तंत्र के क्षरण जैसे गंभीर परिणाम भी पैदा कर रही है।

इस संकट की जड़ें संरचनात्मक नीतियों और प्रोत्साहनों में निहित हैं। हरित क्रांति के बाद से न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) और सरकारी खरीद की गारंटी ने किसानों को गेहूं–धान की एकाधिकार खेती की ओर धकेला, खासकर पंजाब और हरियाणा में। धान जैसी जल–गहन फसलें, जो स्थानीय जलवायु के अनुकूल भी नहीं हैं, बड़े पैमाने पर उगाई जाने लगीं क्योंकि बाजार और नीतियां इन्हें पुरस्कृत करती रहीं। इसके साथ ही कृषि के लिए मुफ्त या भारी सब्सिडी वाली बिजली ने पंपिंग लागत को नगण्य बना दिया, जिससे किसानों के लिए अतिरिक्त भूजल निकालने की सीमांत लागत शून्य हो गई और अंधाधुंध निकासी को प्रोत्साहन मिला। ट्यूबवेल और निजी बोरवेल का तेज विस्तार, कमजोर विनियमन और सामुदायिक स्तर पर प्रबंधन की कमी ने इस स्थिति को और बिगाड़ दिया।

सिंचाई पद्धतियां भी समस्या को बढ़ावा देती हैं। परंपरागत बाढ़ सिंचाई आज भी व्यापक है, जिसमें पानी की बर्बादी अधिक और दक्षता कम होती है। माइक्रो–इरिगेशन (ड्रिप और स्प्रिंकलर) को बढ़ावा देने वाली योजनाएं मौजूद हैं, पर छोटे किसानों के लिए उच्च प्रारंभिक लागत और रखरखाव की चिंताएं अपनाने की दर को सीमित करती हैं। जलवायु परिवर्तन की अनिश्चितता और मानसून की अनियमितता ने किसानों को भूजल पर और अधिक निर्भर बना दिया है।

इस संकट के परिणाम खेतों से कहीं अधिक व्यापक हैं। गिरते जल स्तर के कारण किसानों को गहरे बोरवेल लगाने और अधिक शक्तिशाली पंप स्थापित करने पड़ते हैं, जिससे सिंचाई की लागत बढ़ती है और छोटे व सीमांत किसान असमानुपातिक रूप से प्रभावित होते हैं। गहरे स्तर से पानी निकालने के लिए अधिक ऊर्जा की आवश्यकता होती है, जिससे जल–ऊर्जा संबंध और तंग होता है। पारिस्थितिक दृष्टि से अति–निकासी भूमि के धंसने, तटीय क्षेत्रों में लवणीयता के प्रवेश और जल गुणवत्ता के दीर्घकालिक क्षरण का जोखिम पैदा करती है। सामाजिक स्तर पर जल की कमी कृषि, उद्योग और घरेलू उपयोग के बीच तथा साझा नदी बेसिन वाले राज्यों के बीच संघर्ष को बढ़ावा देती है। आर्थिक रूप से सिंचाई की बढ़ती लागत खेत की लाभप्रदता को कम करती है। इस चुनौती का समाधान केवल तकनीकी सुधारों से नहीं, बल्कि प्रोत्साहनों, संस्थानों और प्रथाओं को पारिस्थितिकीय सीमाओं के अनुरूप पुनर्संरेखित करने से ही संभव है। सबसे पहले, फसल विविधीकरण को नारे से रणनीति में बदलना होगा। पंजाब और हरियाणा में धान की खेती उसी तरह नहीं चल सकती जैसे बंगाल या असम मेंय मक्का, दलहन, तिलहन और बागवानी जैसी कम जल–गहन फसलों को समान बाजार गारंटी, प्रसंस्करण बुनियादी ढांचे और मूल्य समर्थन के साथ बढ़ावा देना होगा। बिना आर्थिक व्यवहार्यता के विविधीकरण केवल कागज पर ही रहेगा। दूसरा, सिंचाई दक्षता का तेजी से विस्तार आवश्यक है।

जंगल में बकरियों को खोज रहे दंपति की पेड़ गिरने से मौत, बेटी घायल

संवाददाता—महराजगंज। पनियरा थाना क्षेत्र के वन टांगिया के ग्राम पंचायत चंदन चाफी के बंगाली कोठी टोला निवासी पति—पत्नी की शनिवार की शाम पेड़ गिरने से मौत हो गई। जंगल में बकरियों को खोजने के दौरान उनके उपर साखू का पेड़ गिर गया था। घटना में उनके साथ गई उनकी पुत्री बुरी तरह से घायल हो गई। बारिश थमने के बाद रात को मौके पर गये लोग दोनों के शव को घर लाए। सूचना पर घ्पहुची पुलिस शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजने की तैयारी में लगी है। बताया जा रहा है कि शनिवार की दोपहर में गांव निवासी इस दंपती की बेटी अंजीलिका अपनी बकरियों को लेकर जंगल में चराने गयी थी।

घर पहुंचकर अपने पिता को बकरियों के जंगल में ही छूट जाने की बात बताई। तो उसके 50 वर्षीय पिता गौरीशंकर पुत्र रामवृक्ष पासवान व मां श्रीमती उसे लेकर जंगल में बकरियों को खोजने चले गये। उसी दौरान साखू का एक पेड़ पति—पत्नी के उपर गिर गया, जिससे उनकी मौके पर ही मौत हो गई। अंजीलिका को भी सर में चोट लग गई। लोगों ने बरसात रुकने पर जंगल में जाकर उनकी तलाश शुरू की और उनके शवों को घर लाया। पुलिस को सूचना दी गई। मृतक पति—पत्नी का पुत्र अखिलेश हैदराबाद में है। चार पुत्रियों में कौशिल्या व सुशीला की शादी हो चुकी है, जबकि हौसिला व अंजीलिका व अखिलेश अभी अविवाहित हैं। थानाध्यक्ष कुवर गौरव सिंह ने बताया कि सूचना पर मौके पर पुलिस पहुंची है। उच्चाधिकारियों को घटना की सूचना दी गई है। शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेजा जा रहा है।

इंजेक्शन लगने के बाद अधेड़ की हालत बिगड़ी, अस्पताल में मौत

संवाददाता—महराजगंज। मिठौरा क्षेत्र के नंदाभार चौराहे पर रविवार दोपहर इलाज कराने पहुंचे करीब 50 वर्षीय प्रकाश भारती की इंजेक्शन लगने के बाद हालत बिगड़ गई। उन्हें एंबुलेंस से जिला अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने जांच के बाद उन्हें मृत घोषित कर दिया। घटना की जानकारी मिलते ही परिजन अस्पताल पहुंचे। प्रकाश की मौत से परिवार में कोहराम मच गया। सोनवल निवासी प्रकाश भारती की तबीयत खराब थी। परिजनों के अनुसार वह इलाज के लिए नंदाभार चौराहे पर एक चिकित्सक के पास गए थे। वहां इंजेक्शन लगाए जाने के कुछ देर बाद उनकी हालत बिगड़ने लगी। स्थिति गंभीर होने पर एंबुलेंस से उन्हें जिला अस्पताल भेजा गया।

अस्पताल पहुंचने पर चिकित्सकों ने जांच की, लेकिन तब तक उनकी मौत हो चुकी थी। मृतक की पत्नी राजकमल व उनके दो बच्चे बालमुकुंद व गुड्डू हैं। घटना के बाद परिजनों का रो—रोकर बुरा हाल है। इंजेक्शन लगाए जाने के बाद ही तबीयत बिगड़ने की बात सामने आने से घटना को लेकर चर्चा है। हालांकि मौत की वास्तविक वजह अभी स्पष्ट नहीं है। इसके लिए जांच व चिकित्सकीय रिपोर्ट महत्वपूर्ण होगी। इस मामले में थानाध्यक्ष अनूप तिवारी ने बताया कि मृतक को इंजेक्शन लगाए जाने की जानकारी पुलिस को नहीं है। मामले में अभी परिजनों की ओर से कोई तहरीर नहीं मिली है। तहरीर मिलने पर मामले की जांच कर नियमानुसार विधिक कार्रवाई की जाएगी।

भारी बारिश में भरभराकर गिरा कच्चा मकान, मलबे में दबकर महिला की मौत

संवाददाता—महराजगंज। जिले के कोल्हुई थाना क्षेत्र के जिगिनिहा गांव में रविवार सुबह भारी बारिश के बीच एक दर्दनाक हादसा हो गया। एक कच्चा मकान अचानक भरभराकर गिर गया। मकान के मलबे में दबकर 59 वर्षीय कुसुमी देवी पत्नी संतराम यादव की मौत हो गई। हादसे के समय उसका पति भी मकान के अंदर मौजूद था। संयोग अच्छा था कि वह बाल—बाल बच गया। घटना के बाद परिवार में कोहराम मच गया। वहीं महिला की मौत से पूरे गांव में शोक की लहर दौड़ गई। बताया जा रहा है कि कुसुमी देवी का परिवार आर्थिक रूप से कमजोर है। परिवार पहले से ही कई परेशानियों से जूझ रहा था। मृतका के दो बेटे थे, जिनमें से एक की पहले ही मौत हो चुकी है। जबकि दूसरा अपने ससुराल में रहता है। उनकी दोनों बेटियों की शादी हो चुकी है। ऐसे में वृद्ध दंपती अपने जीवन का गुजर—बसर इसी जर्जर मकान में कर रहे थे। कुसुमी देवी के पति का चार माह पूर्व दुर्घटना में पैर टूट गया था। इसी बीच रविवार सुबह भारी बारिश के दौरान कच्चा मकान ढहने से महिला की जान चली गई। एसओ आलोक सिंह ने बताया कि घटना की सूचना मिलते ही मौके पर पहुंच कर स्थिति की जानकारी ली गई। शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिये भेजा गया है। परिवार को आर्थिक मदद दिलाने के लिए हल्का लेखपाल से बात करके मामले की जानकारी दी गई है।

बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में पहुंचे डीएम—एसपी, दिया जरूरी इंतजाम करने का निर्देश

संवाददाता—महराजगंज। पिछले चार दिनों से हो रही अतिवृष्टि के कारण बाढ़ के हालात बन गए हैं। इसको लेकर डीएम गौरव सिंह सोगरवाल एवं एसपी शक्ति मोहन अवस्थी ने रविवार को बाढ़ प्रभावित व संवेदनशील क्षेत्रों का स्थलीय निरीक्षण कर स्थिति का जायजा लिया। दोनों अधिकारियों ने सबसे पहले टेल फाल पहुंचकर नारायणी नदी के जलस्तर एवं आसपास के क्षेत्रों की स्थिति का निरीक्षण किया।

गंडक बैराज से लगभग 4 लाख 16 हजार क्यूसेक पानी छोड़े जाने के कारण नारायणी नदी का जलस्तर बढ़ा हुआ है। इसके चलते कुछ क्षेत्रों में बाढ़ जैसे हालात उत्पन्न हुए हैं। जिलाधिकारी ने अधिकारियों को पूरी सतर्कता के साथ स्थिति पर लगातार निगरानी रखने तथा प्रभावित क्षेत्रों में आवश्यक व्यवस्थाएं तत्काल सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। इसके बाद डीएम व एसपी ने निचलौल तहसील के गेड़हवा गांव पहुंचकर बाढ़ जैसे हालात का सामना कर रहे ग्रामीणों से संवाद किया। जिलाधिकारी ने ग्रामीणों को आश्वस्त किया कि जिला प्रशासन उनकी सहायता के लिए पूरी तरह तत्पर है और किसी भी प्रकार की समस्या नहीं होने दी जाएगी। गेड़हवा गांव में लगभग 350 परिवार अतिवृष्टि के कारण उत्पन्न बाढ़ जैसे हालात से प्रभावित हैं। डीएम ने एसडीएम निचलौल को निर्देशित किया कि सभी प्रभावित ग्रामीणों को राशन किट उपलब्ध कराई जाए तथा तत्काल कम्युनिटी किचन शुरू कराया जाए, जिससे प्रभावित परिवारों को भोजन की समस्या न हो। साथ ही उन्होंने प्रभावित क्षेत्र में मोबाइल मेडिकल यूनिट स्थापित कर आवश्यक स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। डीएम ने पशुओं की सुरक्षा को भी प्राथमिकता देते हुए पृथक सुरक्षित स्थल चिन्हित करने तथा वहां भूसा एवं चारे की पर्याप्त व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि जहां भी बाढ़ जैसे हालात हैं, वहां प्रशासनिक टीमें सक्रिय रहें और राहत एवं बचाव से संबंधित सभी आवश्यक इंतजाम पहले से सुनिश्चित किए जाएं। एसपी ने पुलिस विभाग एवं अन्य क्विक रिस्पांस टीमों को अलर्ट मोड पर रहने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि आवश्यकता पड़ने पर प्रभावित नागरिकों को तत्काल सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया जाए। निरीक्षण के दौरान अपर जिलाधिकारी (विश्रा) डॉ. प्रशांत कुमार, उपजिलाधिकारी निचलौल अवनीश त्रिपाठी, तहसीलदार निचलौल अमित सिंह सहित संबंधित अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

सेवा और संघर्ष की विरासत को किया नमन, जरूरतमंदों में बांटे वस्त्र,व फल

—भारतीय बस्ती संवाददाता—

अयोध्या। गरीबों, वंचितों और जरूरतमंदों की आवाज को बुलंद करने वाले वरिष्ठ अधिवक्ता एवं समाजसेवी स्वर्गीय कृष्णानंद त्रिपाठी की जयंती पर रविवार को सनातन रक्षक संघ एवं कृष्णानंद फाउंडेशन की ओर से श्रद्धा और सेवा का संगम देखने को मिला। जन्मदिवस के अवसर पर जरूरतमंदों को वस्त्र व फल वितरित किए गए। इस दौरान केक काटकर फोटो पर पुष्पांजलि अर्पित कर स्व कृष्णानंद त्रिपाठी के व्यक्तित्व और कृतित्व को श्रद्धापूर्वक याद किया गया।कार्यक्रम में कृष्णानंद फाउंडेशन के संस्थापक एवं सनातन रक्षक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष मुकुंद माधव त्रिपाठी ने कहा कि उनके पिता ने अपना जीवन समाज के कमजोर और वंचित वर्ग के अधिकारों के लिए समर्पित कर दिया। अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाना और जरूरतमंदों के साथ खड़ा होना उनके जीवन का ध्येय रहा। समाजसेवा उनके लिए महज दायित्व नहीं, बल्कि जीवन का उद्देश्य थी। उन्होंने कहा कि स्वर्गीय कृष्णानंद त्रिपाठी के दिखाए मार्ग पर चलना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है।जरूरतमंदों की सेवा और समाजहित के कार्यों को निरंतर आगे बढ़ाया जाएगा। सनातन संस्कृति, समाज और वंचित वर्ग के हितों के लिए परिवार और संगठन पूरी प्रतिबद्धता के साथ कार्य करता रहेगा।मुकुंद माधव त्रिपाठी ने कहा कि स्वर्गीय कृष्णानंद त्रिपाठी का जीवन नई पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनके संघर्ष, सेवा भावना और सामाजिक सरोकारों को आत्मसात करना ही जन्मदिवस आयोजन की सार्थकता है। कार्यक्रम के दौरान जरूरतमंदों को वस्त्र वितरित कर सेवा के संकल्प को आगे बढ़ाया गया।इस अवसर पर वंदना त्रिपाठी, गीता त्रिपाठी, मानस त्रिपाठी, कुलभूषण द्विवेदी, विकास सिंह सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

लगातार बारिश से फसलें प्रभावितः किसानों ने मांगा मुआवजा, रास्ती का जलस्तर बढ़ा, कई जगह पेड़ गिरे

संवाददाता—श्रावस्ती। लगातार तीन दिनों से हुई बारिश ने किसानों की चिंता बढ़ा दी है। रविवार दोपहर तक किसानों के मुताबिक, खेतों में पानी भरने और तेज हवाओं के कारण हजारों बीघा धान की फसल प्रभावित हुई है। कई निचले इलाकों में पकी और बालियां निकल चुकी धान की फसल जमीन पर गिर गई है। हालांकि, जिन खेतों में धान की फसल अभी बालियां निकलने की स्थिति में नहीं पहुंची है और जहां पानी का भराव कम है, वहां किसान बारिश को फायदेमंद भी बता रहे हैं। ऐसे में इस बारिश का किसानों पर मिला—जुला असर पड़ा है।

शनिवार को तेज हवाओं के साथ हुई बारिश से कई निचले इलाकों में धान की फसल गिर गई। जिन खेतों में बालियां निकल चुकी थीं और दाना बनने की प्रक्रिया चल रही थी, वहां पानी भरने से किसानों को नुकसान की आशंका है। किसानों का कहना है कि खेतों में लंबे समय तक पानी भरा रहा तो धान की बालियों पर असर पड़ सकता है और दाना कम पड़ने की संभावना है।

रविवार दोपहर 12 बजे तक नदी का जलस्तर खतरे के निशान से करीब 70 सेंटीमीटर ऊपर रहा। इससे तटवर्ती इलाकों में संभावित बाढ़ को लेकर भी लोगों की चिंता बढ़ी हुई है। हालांकि रविवार सुबह से बारिश थमने और कुछ इलाकों में हल्की धूप निकलने से किसानों को थोड़ी राहत मिली है। किसानों को उम्मीद है कि मौसम साफ रहा और खेतों से पानी जल्द निकल गया तो फसलों का नुकसान कुछ कम हो सकता है।

बारिश और तेज हवाओं के कारण कई इलाकों में बड़ी संख्या में पेड़ गिर गए हैं। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में आवागमन भी प्रभावित हुआ है। किसान गोली, वसीम, निब्बर और सरोज समेत कई किसानों ने प्रशासन से फसलों का स्थलीय सर्वे कराने और वास्तविक नुकसान का आकलन करने की मांग की है। किसानों ने प्रभावित लोगों को नियमानुसार मुआवजा दिलाने की भी मांग की है।

किसान मोतीलाल यादव ने बताया कि लगातार बारिश से धान के साथ अरहर और मक्का की फसलों को भी नुकसान पहुंचा है। उन्होंने कहा कि यदि नुकसान के आधार पर मुआवजा मिलता है तो गरीब किसानों को राहत मिलेगी।

वहीं रामनारायण ने कहा कि कई खेतों में धान की फसल पूरी तरह पानी में डूब गई है। उन्होंने कहा कि जब फसल को बारिश की जरूरत थी, तब पर्याप्त पानी नहीं मिला और अब जरूरत से ज्यादा बारिश ने किसानों की परेशानी बढ़ा दी है।

उफनाई टेढ़ी नदी, पुल पर घुटनों तक पानी, प्रशासन ने वाहनों का आवागमन रोकने के दिए निर्देश, बैरिकेडिंग नहीं होने से बढ़ा खतरा

संवाददाता—गोण्डा। रविवार शाम करीब 4 बजे टेढ़ी नदी के उफान पर आने से गोंडा—कटरा बाजार मार्ग पर चंदवतपुर घाट का पुल पानी में डूब गया। पुल के ऊपर से घुटनों तक पानी तेज धार के साथ बहता रहा। इसके बावजूद देर तक वाहन और पैदल लोग पुल पार करते रहे। मौके पर बैरिकेडिंग और पुलिस तैनाती नहीं होने से हादसे का खतरा बना रहा। प्रशासन को जानकारी मिलने के बाद वाहनों का आवागमन बंद कराने के निर्देश दिए गए। पुल पर पानी का बहाव तेज होने के बावजूद स्थानीय लोग और वाहन चालक जोखिम लेकर इसे पार करते दिखाई दिए। भारी वाहनों के गुजरने पर पानी की तेज लहरें उठ रही थीं, जिससे पैदल यात्रियों और बाइक सवारों के लिए खतरा और बढ़ गया। यह पुल गोंडा जिला मुख्यालय को कटरा बाजार से जोड़ता है। ग्रामीणों के मुताबिक, बरसात के मौसम में पुल हर साल पानी में डूब जाता है। पहले भी यहां हादसे हो चुके हैं।

पुल के दोनों किनारों पर रेलिंग

की व्यवस्था नहीं है। आसपास करीब 10–10 फीट गहरे गड्ढे भी बताए जा रहे हैं। ऐसे में तेज बहाव के बीच पुल पार करने वाले लोगों के लिए स्थिति और जोखिम भरी हो जाती है। ग्रामीणों का कहना है कि पुल को ऊंचा करने और स्थायी समाधान की मांग लंबे समय से की जा रही है, लेकिन अब तक उन्हें सिर्फ आश्वासन मिला है। उन्होंने चेतावनी दी कि जल्द सुरक्षा व्यवस्था मजबूत नहीं की गई और पुल के नवनिर्माण की प्रक्रिया शुरू नहीं हुई तो बड़ा आंदोलन किया जाएगा। गोंडा के अपर जिलाधिकारी प्रमोद झा ने बताया कि एसडीएम सदर जितेंद्र कुमार ने मौके पर पहुंचकर स्थिति का निरीक्षण किया है। उन्होंने कहा कि किसी की जान जोखिम में नहीं डाली जा सकती। एडिशनल एसपी को पुल से वाहनों का आवागमन बंद कराने के निर्देश दिए गए हैं। एडीएम के मुताबिक, फिलहाल पैदल लोगों को निकलने की अनुमति है, लेकिन कुछ देर में वाहनों का आवागमन भी पूरी तरह बंद कर दिया जाएगा। प्रशासन की टीम लगातार स्थिति पर नजर बनाए हुए है।

नेपाल के देवघाट में 6.27 लाख क्यूसेक पार गंडक, बैराज से 4.16 लाख पानी छोड़े जाने के बाद तराई में हाहाकार

संवाददाता—महराजगंज। नेपाल के जलग्रहण क्षेत्रों और तराई में हो रही अतिवृष्टि के कारण गंडक नदी ने अत्यंत विकराल रूप धारण कर लिया है। नेपाल के देवघाट मॉनिटरिंग स्टेशन पर रविवार सुबह 9ः15 बजे जलस्तर 11.34 मीटर दर्ज किया गया, जिसके अनुसार नदी का डिस्चार्ज 6लाख 27हजार 200 क्यूसेक के स्तर को पार कर गया। देवघाट में जलप्रवाह का रुख लगातार बढ़ता पर होने से भारतीय क्षेत्र की तराई में स्थिति भयावह होती जा रही है। इसका सीधा असर वाल्मीकिनगर स्थित गंडक बैराज पर पड़ रहा है, जहां से रविवार सुबह छह बजे के 4 लाख क्यूसेक की तुलना में सुबह 10 बजे डिस्चार्ज बढ़कर 4.16 लाख क्यूसेक पहुंच गया है। बैराज पर बढ़ते जलदाब को देखते हुए सभी फाटकों को खोलकर फ्री—फ्लो मोड में पानी का निकास किया जा रहा है, जबकि कटान और संरचनात्मक क्षति को रोकने के लिए मुख्य पूर्वी व पश्चिमी नहर में जलप्रवाह पूरी तरह बंद कर दिया गया है। सिंचाई विभाग के बाढ़ नियंत्रण कक्ष के अनुसार वाल्मिकीनगर बैराज का अपस्ट्रीम जलस्तर रविवार सुबह छह बजे 361.90 फीट था, जो महज चार घंटे बाद सुबह 10 बजे 0.50 फीट बढ़कर 362.40 फीट पर पहुंच गया। वहीं डाउनस्ट्रीम का जलस्तर भी 360.30 फीट से बढ़कर 360.70 फीट दर्ज किया गया। लगातार बढ़ रहे जलस्तर के कारण तटबंधों पर पानी का दबाव अत्यधिक बढ़ गया है। हालांकि सिंचाई विभाग की सुबह आठ बजे की रिपोर्ट के अनुसार जिले और नेपाल सीमा के सभी मुख्य तटबंध सुरक्षित हैं और उन पर सतर्कता बढ़ा दी गई है।

बाढ़ नियंत्रण कक्ष के आंकड़ों के मुताबिक बीते 24 घंटे के भीतर जिले में औसतन 147 मिमी बारिश दर्ज की गई है, जिससे जिले में कुल बारिश का आंकड़ा 1047 मिमी पहुंच गया है। वहीं संवेदनशील बी—गैप क्षेत्र में पिछले 24 घंटे में 200 मिमी मूसलाधार बारिश हुई है, जिससे कुल बारिश 1580 मिमी हो चुकी है। स्थानीय बारिश व गंडक के उफान के चलते जिले की अन्य नदियां भी उफान पर हैं। त्रिमुहानी घाट पर रोहिन नदी का जलस्तर 81.22 मीटर पहुंच गया है। यहां खतरे का निशान 82.44 मीटर है। भौराबारी में रोहिन का जलस्तर 77.15 मीटर दर्ज किया गया। रतनपुर रोहिन बैराज से 17,620.10 क्यूसेक पानी प्रवाहित हो रहा है। इसके अलावा राप्ती नदी रिगौली बांध पर 78.91 मीटर, चंदन नदी 101.50 मीटर और प्यास नदी 102.50 मीटर पर बह रही है। महाव नाला भी खतरे के निशान से ऊपर 11 फीट 6 इंच के स्तर पर पहुंच गया है।

नेपाल में गंडक नदी व उसकी सहायक नदियों के जलग्रहण क्षेत्रों में लगातार बारिश के बाद नदी का प्रवाह तेजी से बढ़ रहा है। केंद्रीय जल आयोग ने रविवार को उत्तर प्रदेश व बिहार के लिए विशेष सलाह जारी कर गंडक में पानी का प्रवाह आगे भी बढ़ने की संभावना जताई है। भारत—नेपाल सीमा के आसपास व गंडक नदी के निचले क्षेत्रों में स्थानीय प्रशासन को सतर्क रहने को कहा गया है। केंद्रीय जल आयोग के बाढ़ पूर्वानुमान प्रबोधन निदेशालय के अनुसार 27 सितंबर सुबह छह बजे गंडक बैराज पर 4.04 लाख क्यूसेक पानी का प्रवाह दर्ज हुआ। नेपाल के ऊपरी हिस्सों में भी नदी का रुख बढ़ने का है। आयोग ने कहा है कि बढ़ा हुआ पानी गंडक नदी के निचले हिस्सों की ओर जाएगा। केंद्रीय जल आयोग ने भारत—नेपाल सीमा के आसपास व बिहार व उत्तर प्रदेश में गंडक नदी के निचले क्षेत्रों के स्थानीय प्रशासन को स्थिति पर करीबी निगरानी रखने की सलाह दी है। साथ ही आवश्यक एहतियाती कदम उठाने को कहा गया है। गंडक में पानी बढ़ने की संभावना को देखते हुए जिला प्रशासन ने तटीय क्षेत्रों में सतर्कता बढ़ा दिया है। केंद्रीय जल आयोग से जारी चेतावनी के बाद गंडक और सहायक नदियों के लगातार बढ़ते जलस्तर को देखते हुए जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने पूरे तटीय व दियारा क्षेत्र में अलर्ट जारी कर दिया है। निगरानी टीमों को तटबंधों पर 24 घंटे गश्त करने और किसी भी आपात स्थिति में तत्काल कंट्रोल रूम को सूचित करने के निर्देश दिए गए हैं।

आंधी—बारिश से 7 लोगों की मौत, 26—27 सितंबर को पेड़, दीवार, टीनशेड गिरने से 2 घायल

संवाददाता—बलरामपुर। बीते 26 और 27 सितंबर को हुई तेज बारिश और आंधी—तूफान ने भारी तबाही मचाई।तेज हवाओं के बीच कहीं पेड़ धराशायी हुए तो कहीं कच्ची—पक्की दीवारें और टीनशेड भरभराकर गिर पड़े। इन हादसों में उपलब्ध प्रशासनिक सूचना के मुताबिक बलरामपुर जिले के विभिन्न तहसील क्षेत्रों में कई लोगों की जान चली गई, जबकि दो लोग घायल हुए हैं। वहीं, बलरामपुर के दो ग्रामीणों की गोण्डा जिले में पेड़ गिरने से मौत की भी सूचना है।

प्रशासन की ओर से जारी क्षति संबंधी सूचना के अनुसार 26 और 27 सितंबर 2026 की दोपहर तक जिले में आंधी—तूफान से हुए हादसों में जनहानि दर्ज की गई है। बलरामपुर तहसील क्षेत्र के गंगापुर वीरपुर गांव में पेड़ गिरने से प्रानचती (66) पत्नी पाटेश्वरी की मौत हो गई। हादसे के बाद गांव में मातम पसरा हुआ है।

इसी तहसील क्षेत्र के कलन्दरपुर गांव में दीवार गिरने से चम्पा देवी पत्नी राघवराम और प्रेमनरायन पुत्र राघवराम की मौत हो गई। वहीं हरैया सतधरवा में टीनशेड गिरने से मुन्नी देवी पत्नी सीताराम की जान चली गई।

तुलसीपुर तहसील क्षेत्र में भी आंधी—तूफान का कहर देखने को मिला। पेड़ गिरने की घटना में विनोद पुत्र घनश्याम, निवासी हरहटा गंभीर रूप से घायल हुए थे। उन्हें उपचार के लिए लखनऊ ले जाया गया, जहां इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई। इसी क्षेत्र में रागपाल यादव (53) पुत्र स्वर्गीय दुलारे यादव निवासी मोतीनगर बरगदवा पेड़ गिरने से घायल हुए हैं। उनका उपचार चल रहा है।

उतरौला तहसील क्षेत्र में भी तेज आंधी के दौरान पेड़ गिरने से दो लोगों की मौत की सूचना है।पचौधा गांव निवासी संदीप पुत्र स्वामीनाथ की पेड़ गिरने से मौत हो गई। जिगना गांव निवासी रेनू पत्नी रामउजागर की भी पेड़ गिरने से मृत्यु हो गई।लगातार तेज हवाओं और बारिश के बीच पेड़ों के गिरने से ग्रामीण क्षेत्रों में दहशत का माहौल रहा।

प्रशासनिक रिपोर्ट में यह भी उल्लेख किया गया है कि बलरामपुर तहसील के सकड़सिरया गांव निवासी खालिद रजा पुत्र मोहम्मद हासिम और इमरान पुत्र अब्दुल अजीज की गोण्डा जिले के बाबागंज तहसील क्षेत्र में पेड़ गिरने से मौत हो गई।दोनों के शव पोस्टमार्टम के लिए गोण्डा स्थित पोस्टमार्टम हाउस भेजे गए हैं।

बारिश—हवा से गिरे गन्ने की बंधाई पर जोर, खेतों में पहुंची चीनी मिल की टीम

संवाददाता—महराजगंज। बारिश और तेज हवाओं के कारण खेतों में गिरे गन्ने की फसल को नुकसान से बचाने के लिए रविवार को आईपीएल चीनी मिल सिसवा के यूनिट हेड दीपेंद्र कुमार और गन्ना विभागाध्यक्ष धीरज सिंह ने विभिन्न गांवों का दौरा किया। अधिकारियों ने खेतों में पहुंचकर गिरे गन्ने की स्थिति का जायजा लिया और किसानों को समय रहते फसल की बंधाई कराने के लिए प्रेरित किया। दौरे के दौरान टीम सोनबरसा पहुंची, जहां चीनी मिल के स्टाफ से फील्ड में चल रहे कार्यों की जानकारी ली गई। अधिकारियों ने कर्मचारियों से किसानों के खेतों में गिरे गन्ने को व्यवस्थित कराने, उसकी बंधाई कराने तथा फसल को दोबारा खड़ा करने के लिए किए जा रहे प्रयासों के बारे में जानकारी प्राप्त की। उन्होंने फील्ड कर्मचारियों को किसानों के साथ समन्वय बनाकर तेजी से कार्य कराने के आवश्यक निर्देश दिए, ताकि बारिश और हवा से गिरे गन्ने में होने वाले अतिरिक्त नुकसान को कम किया जा सके। इसके बाद टीम ग्राम खेसरारी पहुंची। यहां जनार्दन प्रधान के गन्ने के प्लाट का निरीक्षण करते हुए यूनिट हेड दीपेंद्र कुमार ने खेत में मौजूद किसानों को गिरे हुए गन्ने की बंधाई को लेकर जरूरी सुझाव दिए। उन्होंने किसानों से कहा कि तेज हवा और बारिश के बाद खेतों में गिरे गन्ने को लंबे समय तक उसी स्थिति में न छोड़ें। समय से बंधाई करने से फसल को संभालने और संभावित नुकसान को कम करने में मदद मिल सकती है।

पार्किंग के अभाव में सड़क पर खड़े हो रहे वाहन, प्राधिकरण की कार्यप्रणाली पर सवाल

—भारतीय बस्ती संवाददाता—

अयोध्या। रामनगरी में बढ़ते व्यावसायिक विस्तार के साथ पार्किंग की समस्या भी गंभीर होती जा रही है। शहर के प्रमुख मार्गों पर होटल, रेस्टोरेंट और गेस्ट हाउस संचालित हो रहे हैं, लेकिन कई प्रतिष्ठानों के बाहर पर्याप्त पार्किंग व्यवस्था नहीं होने से ग्राहकों और वहां ठहरने वाले लोगों के वाहन सड़क किनारे खड़े किए जा रहे हैं। इससे यातायात प्रभावित होने के साथ जाम की स्थिति बन रही है।

उडुपी और उडुपी एक्सप्रेस के सामने भी सड़क किनारे वाहनों की कतार लगने की शिकायत है। स्थानीय लोगों के अनुसार रेस्टोरेंट में आने वाले ग्राहकों के साथ ऊपर संचालित किए जा रहे कमरों में ठहरने वाले लोगों के वाहन भी सड़क पर खड़े होते हैं। इससे मार्ग से गुजरने वाले राहगीरों और अन्य वाहन चालकों को परेशानी होती है।इस मामले में सबसे बड़ा सवाल अयोध्या विकास प्राधिकरण की मानचित्र स्वीकृति प्रक्रिया पर उठ रहा है। यदि संबंधित व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में गेस्ट हाउस अथवा ठहरने के लिए कमरे संचालित हैं तो उनके मानचित्र में पार्किंग के लिए कितनी जगह स्वीकृत है? क्या मानचित्र स्वीकृत करते समय वाहनों की संख्या और पार्किंग की जरूरत का आकलन किया गया था? यदि पार्किंग की व्यवस्था स्वीकृत है तो उसका मौके पर कितना उपयोग हो रहा है, इसकी जांच की मांग स्थानीय लोगों ने की है।लोगों का कहना है कि सड़क और फुटपाथ पर ठेला या दुकान लगाने वालों के खिलाफ कार्रवाई की जाती है, लेकिन व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के सामने सड़क पर खड़े वाहनों को लेकर प्रभावी कार्रवाई क्यों नहीं होती, यह भी सवाल है।

स्थानीय लोगों ने अयोध्या विकास प्राधिकरण, नगर निगम और यातायात पुलिस से संबंधित प्रतिष्ठानों की पार्किंग व्यवस्था और स्वीकृत मानचित्र की जांच कराने की मांग की है। साथ ही सड़क पर वाहनों की पार्किंग से यातायात बाधित होने की स्थिति में नियमानुसार कार्रवाई की मांग की है।अब देखना यह है कि जिम्मेदार विभाग मौके की स्थिति और स्वीकृत मानकों की जांच कर पार्किंग समस्या का समाधान कराते हैं या सड़क पर वाहन खड़े होने का सिलसिला यूं ही जारी रहता है।

गूगल ज्ञान से सनातन पर बहस बेमानी, शास्त्र पढ़े बिना धर्म पर बोलना प्रपंच –जगद्गुरु स्वामी राजेंद्रदास

संवाददाता–गोरखपुर। देश में इन दिनों सनातन धर्म को लेकर छिड़ी सियासी और सामाजिक बहसों के बीच इसके वास्तविक मर्म और व्यावहारिक स्वरूप पर जगद्गुरु स्वामी राजेंद्रदास देवाचार्य जी की गंभीर वैचारिक चिंता सामने आई है। एक विशेष साक्षात्कार में जगद्गुरु ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि जो लोग आज इस विषय पर व्याख्यान दे रहे हैं, उन्हें इसके मूल अर्थ की जानकारी ही नहीं है। गूगल के पास उपलब्ध अधकचरी जानकारियों को पढ़कर ध र्म की व्याख्या करना वैसा ही है, जैसे कानून की समझ न रखने वाला व्यक्ति अदालती फैसलों पर राय दे। सनातन पर जारी निरर्थक बहसों को कड़वा सच बताते हुए उन्होंने कहा कि जिसके जीवन में शौच, सत्य और सदाचार नहीं है, उसे धर्म पर कुछ भी कहने का कोई नैतिक अधिकार नहीं है।

जगद्गुरु स्वामी राजेंद्रदास देवाचार्य ने सनातन शब्द को बेहद सरल रूप में परिभाषित करते हुए कहा कि सदा बच यानी जो भूत, वर्तमान और भविष्य तीनों कालों में एक समान रहे, वही सनातन है। जिस प्रकार अग्नि का स्वाभाविक गुण दाहकता (गर्मी) है और यदि वह बदल जाए तो वह अग्नि नहीं बल्कि राख या कोयला बन जाती है, ठीक वैसे ही धर्म का स्वरूप अपरिवर्तनीय है। वर्तमान में समय के अनुरूप धर्म की व्याख्या बदलने की जो विचारध ारा पनप रही है, वह उचित नहीं है। सनातन की सबसे सरल परिभाषा ही यही है –एष धर्मः सनातनः– अर्थात जिसने हम पर उपकार किया है, उसके प्रति कृतज्ञ रहना और तन–मन–धन से उसकी सेवा करना। धर्म पर बहस करने वालों को गूगल पर निर्भर रहने के बजाय पारंपरिक गुरु–शिष्य परंपरा से वेदों, रामायण, श्रीमदभागवत और महाभारत का अध्ययन करना चाहिए।

सनातन में पुरुषार्थ चतुष्टय (ध र्म, अर्थ, काम और मोक्ष) की प्राप्ति के लिए माता–पिता के प्रति श्रद्धा को सबसे अनिवार्य अंग बताते हुए जगद्गुरु ने पुराणों के एक श्लोक का संदर्भ दिया। उन्होंने स्पष्ट किया कि माता–पिता के जीवित रहते उनकी आज्ञा का पालन करना और उनके दिवंगत होने के बाद श्राद्ध, तर्पण व गया में पिंडदान के कर्तव्य को पूर्ण करना ही एक वास्तविक संतान का ध र्म है। इसके बिना कोई भी पुत्र या पुत्री कहलाने योग्य नहीं है। उन्होंने आगे कहा कि जीवन में मिलने वाली हर उपलब्धि में देवी–देवताओं, ऋषि–मुनियों और संतों का अंश (शेयर) होता है, इसलिए उनके प्रति और साथ ही गौमाता के प्रति सेवाभाव रखना ही सनातन धर्म का मूल आधार है।

दिल्ली के 'जेन–जी' युवाओं के आचरण पर जगद्गुरु ने तीखी बात कही। उन्होंने कहा, दिल्ली में जिस तरह का चरित्र इन युवाओं का उजागर हुआ है, वे भारत के युवक–युवती नहीं हो सकते। पाश्चात्य देशों का अंधानुकरण करने वाले भी इस हद तक नहीं गिरे हैं। उन्होंने चिंता जताते हुए कहा कि संतानों को बड़ी उम्र में संस्कार देने की कोशिशें हमेशा नाकाम होती हैं, इसकी शुरुआत गर्भ से ही होनी चाहिए। आज के दौर में बच्चों के पथभ्रष्ट होने का मुख्य कारण गृहस्थों (माता–पिता) का खुद विचारशून्य और पाश्चात्य भोगवादिता की ओर भागना है। बच्चे उपदेशों से नहीं, बल्कि माता–पिता के आचरण को देखकर सीखते हैं। इसके लिए जगद्गुरु ने मनुस्मृति के कालजयी श्लोक का संदर्भ दिया– 'लालयेत् पञ्च वर्षाणि, ताडयेत् दश वर्षाणि। प्राप्ते सम्प्राप्ते षोडशे वर्षे पुत्रं मित्र समाचरेत।'

व्याख्या करते हुए कहा कि संतान को 5 वर्ष की आयु तक केवल लाड–प्यार दें, 10 वर्ष तक उसे अनुशासित और शिक्षित करें, लेकिन जैसे ही वह 16 वर्ष की आयु में प्रवेश करे, माता–पिता को उसके साथ मित्र के समान व्यवहार करना चाहिए ताकि वह भटके नहीं। हमारे सनातन वैदिक हिंदू संस्कृति में जाति नहीं वर्ण व्यवस्था है। इस व्यवस्था की दृष्टि से स्थापित किया गया है। भेदभाव, द्वेष–घृणा, बिखराव के लिए जगह नहीं है। इस व्यवस्था के मूल में था देश को, मातृभूमि को एक परिवार मानकर आगे बढ़ें। ज्ञानोपदेश की व्यवस्था ब्राह्मण के जिम्मे हो, राष्ट्र के सीमा विस्तार, सुरक्षा का काम क्षत्रियों को सौंपे। अर्थोपार्जन का जिम्मा कारोबारियों के पास हो और इन सभी के कामों का निर्वहन चौथे वर्ण के जिम्मे है। यह व्यवस्था द्वेष के लिए नहीं है। सच्ची बात है कि जाति जनगणना हो कर कोई अपने नजरिए से देखेगा। सियासी लोग इसे अपने लाभ के नजरिए से देखेंगे, सियासी समीकरण साध कर

उनका मकसद राजनीतिक लाभ प्राप्त करना होगा। मेरा मानना है कि सभी को राजनैतिक विचारधारा और निजी स्वार्थ से ऊपर उठकर सोचना चाहिए। देखना चाहिए कि हिंदुओं की कितनी संख्या है, कितनी जातियां है, इस बात को लेकर संगठित रहने के जरूरत है। जाति जनगणना को हिंदू समाज के बिखराव के रूप में नहीं देखना चाहिए। जातिगत जनगणना उसमें एक और भूल हो रही है। समय–समय पर सुनने में आता है कि धर्मांतरित भी हो गए और लाभ लेने के लिए उस जाति के नाम पर ख्यापित कर रहे हैं। ये छलावा बंद होना चाहिए। बौद्ध हमारी ही शाखा है। सनातनी विचारध ाारा को छोड़ कर बौद्ध धर्म की ओर गए। लोग बौद्ध की ओर जा रहे हैं, तो सोचना होगा कि क्यों? वे जाति व्यवस्था से उद्धिग्न होकर ही गए हैं। फिर जाति व्यवस्था का लाभ क्यों लेना, यह भी जरूरी सवाल है। जो धर्मांतरित हुए हैं, उनकी ही गणना हिंदुओं में होनी चाहिए।

उन्होंने कहा कि जाति जनगणना से भी अधिक खतरनाक वर्तमान में यह चलन बनता जा रहा है कि जाति के नाम पर लोगों पर प्रताड़ना के झूठे आरोप लगाए जाते हैं या शिकायतें की जाती हैं। विडंबना यह है कि झूठी शिकायत करने वालों पर कोई दंडात्मक कार्रवाई नहीं होती। इस प्रकार की प्रवृत्तियां और कानून हिंदू समाज को आपस में बांटने का काम करते हैं। हिंदू समाज को खंडित करने वाली किसी भी गतिविधि को बढ़ावा नहीं दिया जाना चाहिए। जगद्गुरु ने स्पष्ट किया कि वर्तमान समय में समाज के भीतर कई तरह की गंभीर विसंगतियां पनप रही हैं, लेकिन इसके लिए मूल संत समाज को दोष देना पूरी तरह अनुचित है। वास्तविक संत तो सांसारिक मोह–माया और सब कुछ त्यागकर अध्यात्म की राह पर आगे बढ़ते हैं। जगद्गुरु ने एक बड़े सामाजिक और जनसांख्यिकीय संकट की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए कहा, आज के आधुनिक दौर में लोग संतान ही पैदा नहीं कर रहे हैं, या परिवारों का आकार बेहद सीमित कर रहे हैं।

ऐसे में सबसे बड़ा सवाल यह है कि भविष्य में संत कहां से आएंगे? उन्होंने याद दिलाया कि संत कोई आकाश से नहीं टपकते, बल्कि वे इन्हीं गृहस्थ परिवारों के बीच से ही संस्कार पाकर निकलते हैं।उन्होंने पूर्व के कालखंड का स्मरण कराते हुए कहा कि पहले समाज में विरक्त (संसार से दूर रहने वाले) संतों की एक बहुत बड़ी संख्या हुआ करती थी। स्थिति यह थी कि लगभग हर एक–दो परिवारों के बीच से कोई न कोई संत पैदा होता और धर्म की सेवा के लिए मिल जाया करता था।

परंतु, वर्तमान पारिवारिक संरचना और संस्कारों के अभाव ने इस आध्यात्मिक क ड़ी को कमजोर कर दिया है। समाज के सामने खड़े सबसे बड़े संकट पर प्रहार करते हुए जगद्गुरु ने कहा कि आज असली संतों की कमी से भी बड़ी चुनौती यह है कि कुछ लोग बिना किसी त्याग या वैराग्य के, केवल अपने कपड़ों को रंगकर संत के भेष में घूम रहे हैं। ऐसे छद्म भेषी लोग समाज को गुमराह कर रहे हैं और सनातन की साख को ठेस पहुंचा रहे हैं।

समाज और राष्ट्र को सुरक्षित रखने के लिए अब हमें 'आहार शुद्धि से व्यसन मुक्ति' के इस पावन और वैज्ञानिक मार्ग को अपनाना ही होगा। जगद्गुरु ने कहा कि आज की नई पीढ़ी जो दुर्व्यसनों (बुरी आदतों और नशों) की ओर तेजी से आकर्षित हो रही है, उसका सबसे बड़ा कारण हमारे खान–पान का दूषित होना है। यदि हम अपनी संतानों को व्यसनों से दूर रखना चाहते हैं, तो सबसे पहले हमें 'आहार की शुद्धि' पर ध्यान देना होगा। ये जो समाज दिग्भ्रमित हो रहा है, दुर्व्यसनों की ओर आकर्षित हो रहा है। आहार की शुद्धि जरूरी है।

इस पर जोर देंगे तो हमारी संतान व्यसन की ओर नहीं जाएगी। मैं निश्चय पूर्वक यह कह रहा हूं कि जिनके यहां गाय है, बच्चे गाय के दूध–दही–घी का सेवन करते हैं, वे बड़े पदों पर पहुंच कर भी दुर्व्यसनों से दूर रहते हैं।शासन व समाज दोनों को ध्यान देना चाहिए कि जैसा खाए अन्न वैसा होगा मन...वाले सिद्धांत के अनुरूप व्यवस्था हो। प्राथमिक पाठशाला से विश्वविद्यालय तक बच्चों के गाय के दूध–दही–घी पर्याप्त मात्रा में सेवन के लिए मिलना चाहिए।आहार मुक्ति से व्यसन मुक्ति का मार्ग हमें चुनना चाहिए। धर्मांतरण निश्चित रूप से रुकेगा, लेकिन इसके लिए समाज और शासन को जमीनी स्तर पर गंभीर प्रयास करने होंगे। उन्होंने स्पष्ट किया कि केवल बाहरी विरोध करने के बजाय हिंदू समाज को अपनी जड़ों को मजबूत करना होगा। जो लोग अपनी जड़ों से कटकर भ्रमित हो रहे हैं, उसका सबसे बड़ा कारण आत्मज्ञान का अभाव है। उन्होंने कहा, जिन्हें अपने गौरवशाली इतिहास का वास्तविक बोध है और जिन्हें अपने हिंदू समाज की विशालता व वैज्ञानिकता की समझ है, वे कभी भी अपने मूल धर्म से अलग नहीं होंगे। हमें विचार करने की जरूरत है कि तीन हजार साल पहले कौन सा धर्म था। हजरत मोहम्मद साहब से पहले मुस्लिम धर्म का कुछ अतापता नहीं था। ईसामसीह से पहले किसी को ईसाई धर्म के बारे में नहीं पता था। इससे पहले जो धर्म था उसका नाम था वैदिक हिंदू सनातन धर्म। पाठ्यक्रम के माध्यम से या घरों में संस्कार की पाठशाला खोलकर हमें इस विचारधारा से परिचित कराना चाहिए। इस विचार से धर्मांतरण रुकेगा। जगद्गुरु ने सनातन धर्म के सांगठनिक ढांचे को समझाते हुए कहा कि हमारे यहां साधु–संतों की सभी पवित्र परंपराओं को व्यापक रूप से 'षडदेश' कहा जाता है। इन छह मुख्य परंपराओं (संप्रदायों) के भीतर ही पूरा सनातन संप्रदाय समाहित है। इसमें नाथ पंथ का एक अत्यंत विशिष्ट और महत्वपूर्ण स्थान है। इस महान परंपरा की शुरुआत स्वयं आदिनाथ भगवान शिव से हुई थी, जिन्होंने मच्छेंद्रनाथ जी को दिव्य उपदेश दिया था। ऐसी मान्यता और सनातनी परंपरा है कि मच्छेंद्रनाथ जी के यहां स्वयं भगवान शिव ने ही 'गुरु गोरखनाथ' के रूप में अवतार लिया था। सनातन धर्म के पोषण, संरक्षण और संवर्धन में नाथ पंथ के इस पावन ज्ञान का अद्वितीय योगदान रहा है। हमें गोरक्षपीठाधीश्वर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी के व्यवहार से सीख लेनी चाहिए। उनके गुरु महंत अवेद्यनाथ और उनके भी गुरु महंत दिग्विजय नाथ जी से भी सभी को लेनी चाहिए। इससे राष्ट्र में एक बड़ी क्रांति आ सकती है।

राजनीति को स्वेच्छाचारिता से बचाने के लिए उस पर संतों और ध र्म का नैतिक नियंत्रण होना अनिवार्य है। कुछ लोग कहेंगे कि संतों को राजनीति से क्या लेना–देना? परंतु हकीकत यह है कि संत भी इसी राष्ट्र के अन्न–जल का सेवन कर रहे हैं और समाज का दिया हुआ ही ग्रहण करते हैं। ऐसे में राष्ट्र के प्रति अपने दायित्वों का निर्वहन करना उनका स्वाभाविक कर्तव्य है। यह सिद्धांत सिर्फ संतों पर ही नहीं, बल्कि इस पावन मातृभूमि पर पैदा होने वाले हर एक व्यक्ति पर लागू होता है कि वह राष्ट्र के उत्कर्ष और उसकी उन्नति के बारे में गहराई से विचार करे। हमारे यहां राजनीति सदा संत के अनुशासन में होती रही। स्वेच्छाचारिता नहीं थी। हमारे यहां धर्मशास्त्रों में राज्याभिषेक का वर्णन है। सम्राट के अभिषेक के बाद दंडाधिकारी राजा एक दंड सौंपता है। सम्राट कहता है कि यह दंड मेरे हाथ में है, मैं धर्म की मर्यादा व सदाचार की मर्यादा के अनुसार सभी को अपने कर्तव्य का पालन करना होगा। इस मौके पर राजा के आचार्य उसकी पीठ पर हाथ रखकर कहते हैं कि यदि तुम भी मर्यादा का अतिक्रमण करोगे तो मैं तुम्हें दंड दूंगा। सत्पुरुषों का राजनीति पर नियंत्रण रहा है और रहना चाहिए। यदि ऐसा न हुआ तो राजनीति आसुरी नीति हो जाएगी। उत्तर प्रदेश की शासन व्यवस्था को एक संत ने किस तरह से कुशलतापूर्वक निर्वहन करके दिखाया है, इसका प्रमाण है। हम पहली बार सुन रहे हैं कि उत्तर प्रदेश से बाहर भी योगी जी मांग है कि उन्हें भी ऐसा मुख्यमंत्री चाहिए।

रोटरी क्लब बस्ती ग्रेटर सेवा का सशक्त माध्यम–डा. वी.के. वर्मा

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। रोटरी क्लब बस्ती ग्रेटर का 9 वां शपथ ग्रहण समारोह गोटवा स्थित पटेल एस.एम.एच हास्पिटल एण्ड पैरा मेडिकल कालेज के सभागार में सम्पन्न हुआ।' निवर्तमान अध्यक्ष राजेश्वरी देवी ने रो. डा. वी. के. वर्मा को अध्यक्ष का कार्यभार सौपा। सचिव का दायित्व सुमिर गोयल ने संभाला।

अध्यक्ष डा. वी.के. वर्मा ने कहा कि रोटरी समाजसेवा का बड़ा माध्यम है। इस दिशा में रोटरी क्लब बस्ती ग्रेटर द्वारा निरन्तर सृजनात्मक कार्य किये जा रहे हैं। इसे और गति दिया जायेगा। अध्यक्ष डा. वी.के. वर्मा ने कार्यकारिणी की घोषणा करते हुये दो नये सदस्यों को पिन पहनाकर सदस्यता प्रदान की। प्रेस क्लब अध्यक्ष विनोद उपाध्याय ने कहा कि रोटरी सेवा का बड़ा माध्यम है। चार्टर अध्यक्ष रोटेरियन किशन गोयल ने क्लब के कार्यो की विस्तार से जानकारी दी।

कार्यक्रम में क्लब को मण्डल से प्राप्त विभिन्न सकारात्मक कार्यो के लिए मिले पुरस्कारों को सदस्यों में वितरित किया गया। अतिथियों को शाल व दुपट्टा पहनाकर स्वागत किया गया। इस अवसर पर कुष्ठ आश्रम प्रभारी कौशल त्रिपाठी, रोटरी मिडटाउन के पूर्व अध्यक्ष रो. मयंक श्रीवास्तव, डा राजेश पटेल, स्काउट गाइड के कमिश्नर कुलदीप सिंह, डा चन्दा सिंह क्लब सदस्य रोटेरियन महंत राम, अनमोल मोदी, प्रतिभा गोयल, आर डी चौधरी, विकास चौधरी एवं पटेल हास्पिटल के अनेक चिकित्सक, स्वास्थ्यकर्मी उपस्थित रहे।

अधिवक्ताओं ने विधायक महेन्द्रनाथ यादव को सौंपा ज्ञापन

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। शनिवार को कमिश्नर कोर्ट बार एसोसिएशन के अध्यक्ष श्याम प्रकाश शर्मा, महामंत्री शब्बीर अहमद सहित अधिवक्ताओं के एक प्रतिनिधि मण्डल ने विधायक महेन्द्रनाथ यादव को ज्ञापन सौंपा। मांग किया कि अधिवक्ताओं की सुविधा के लिये एसोसिएशन की तहसील परिसर स्थित भवन का जीर्णोद्धार कराया जाय। ज्ञापन देने के बाद कमिश्नर कोर्ट बार एसोसिएशन के अध्यक्ष श्याम प्रकाश शर्मा ने विधायक महेन्द्रनाथ को बताया कि एसोसिएशन का तहसील स्थित भवन जर्जर हो गया है, इसके जीर्णोद्धार से अधिवक्ताओं और वादकारियों को भी सुविधा होगी। विधायक महेन्द्रनाथ ने ज्ञापन लेने के बाद अधिवक्ताओं को आश्वस्त किया कि अति शीघ्र प्राथमिकता के स्तर पर जीर्णोद्धार का कार्य कराया जायेगा।

ज्ञापन सौंपने के दौरान मुख्य रूप से अधिवक्ता श्रीराम यादव, ओम प्रकाशधर द्विवेदी, श्रीकान्त तिवारी, कृष्ण चन्द्र पाण्डेय, विष्णु कुमार श्रीवास्तव, सी.पाल, गिरीश चन्द्र शुक्ल, लालजी पाण्डेय के साथ ही दीनानाथ यादव, गणेश और अनेक अधिवक्ता शामिल रहे।

चक्रवात 'अर्नब' से दुबई में दहशत, मकानों पर झुके पेड़ों से हादसे का खतरा

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

खेसरहा (सिद्धार्थनगर)। खेसरहा विकासखंड अंतर्गत ग्राम पंचायत दुबाई में चक्रवात 'अर्नब' और तेज हवाओं के चलते ग्रामीणों के सामने गंभीर संकट खड़ा हो गया है। तेज हवाओं के कारण गांव में कई विशालकाय पेड़ उखड़कर या झुककर मकानों की ओर आ गए हैं। इन पेड़ों के कभी भी गिरने की आशंका से ग्रामीणों में भय का माहौल बना हुआ है।

ग्रामीणों के अनुसार, तेज हवाओं के चलते पेड़ गिरने से गांव में करीब दो मकान पहले ही क्षतिग्रस्त होकर गिर चुके हैं। इसके बावजूद मकानों के ऊपर झुके तथा खतरे की जद में आए अन्य पेड़ों को अभी तक हटाया नहीं गया है। ऐसे में प्रभावित परिवारों को हर समय किसी बड़े हादसे की आशंका बनी हुई है। ग्रामीणों का कहना है कि ग्राम पंचायत और प्रशासन को मामले को गंभीरता से लेते हुए तत्काल कार्रवाई करनी चाहिए। ग्रामीणों ने मांग की है कि यदि पेड़ों की नीलामी नियमानुसार संभव है तो नीलामी कराई जाए अथवा संबंधित प्रक्रिया के तहत खतरनाक पेड़ों को कटवाकर हटाया जाए, ताकि मकानों और लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित हो सके।

ग्रामीणों का कहना है कि यदि समय रहते पेड़ों को नहीं हटाया गया तो किसी भी समय बड़ा हादसा हो सकता है। प्रभावित परिवारों ने प्रशासन से मौके का निरीक्षण कराकर जल्द से जल्द समाधान कराने की मांग की है। पेड़ों से सबसे अधिक प्रभावित ग्रामीणों में राम प्रसाद, दौलत हुसैन, अशरफी, राजू, विश्वकर्मा, राजा राम, बालकृष्ण गौतम, राकेश प्रसाद, फागू, भागीरथी और सीवर साहित अन्य लोग शामिल हैं। ग्रामीणों का कहना है कि मकानों के ऊपर झुके पेड़ों के कारण परिवार के सदस्यों की सुरक्षा को लेकर लगातार चिंता बनी हुई है।

ग्रामीणों ने स्थानीय प्रशासन एवं ग्राम पंचायत के अधिकारियों से मांग की है कि मामले का तत्काल स्थलीय निरीक्षण कराया जाए और जनहानि की आशंका को देखते हुए खतरनाक पेड़ों को प्राथमिकता के आधार पर हटवाने की कार्रवाई की जाए।

नगर आयुक्त ने जलनिकासी का लिया जायजा

संवाददाता–गोरखपुर। शनिवार की शाम हुई भारी बारिश के बाद रविवार की सुबह 08 बजे नगर आयुक्त अजय जैन जलभराव और जलनिकासी की स्थिति देखने के लिए महानगर की सड़कों पर उतर पड़े। गोलघर से शुरू हुआ निरीक्षण विजय चौक, सावित्री हॉस्पिटल, सुभेर सागर, धर्मशाला अंडरपास, बेतियाहाता, मुंशी प्रेमचंद पार्क होते हुए ट्रांसपोर्ट नगर तक चला। इस दौरान आर्यन हॉस्पिटल वाली गली, चंपा देवी पार्क के बगल की कॉलोनियों, गोरक्ष एंक्लेव के सामने की कॉलोनियों और पाम पैराडाइस के पास स्थित रामगढ़ताल में लगे स्लुइस गेट का भी जाएजा लिया। निरीक्षण के बाद सुबह 8रू30 बजे नगर आयुक्त अजय जैन ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए महानगर में जलनिकासी की स्थिति की समीक्षा की। इसमें अपर नगर आयुक्त, मुख्य अभियंता, महाप्रबंधक जलकल, जोनल अधिकारी, सफाई निरीक्षक समेत निर्माण और जलकल विभाग के अभियंता शामिल हुए। नगर आयुक्त ने सभी अधिकारियों को फील्ड में रहने और जलभराव वाले क्षेत्रों में तत्काल कार्रवाई के निर्देश दिए। नगर आयुक्त अजय जैन के निर्देश पर बारिश थमने के साथ नालों में बहकर आए कूड़े और प्लास्टिक की तत्काल सफाई शुरू हो गई है। सफाई के बाद चूना, मेलाथियान और एंटी लार्वा का छिड़काव अनिवार्य रूप से कराने के निर्देश दिए गए, ताकि मच्छरों के प्रजनन और मलेरिया समेत जलजनित बीमारियों का खतरा कम किया जा सके।

नेपाल मे भारी बारिश से भूस्खलन, दो की मौत, तीन लापता, मकान–सड़कें ध्वस्त

संवाददाता—सिद्धार्थनगर। के पाल्पा जिले में तीन दिनों से हो रही भारी बारिश के कारण बाढ़ और लैंडस्लाइड से जनजीवन प्रभावित है। विभिन्न घटनाओं में दो लोगों की मौत हो गई, जबकि तीन लोग लापता हैं। पुलिस और स्थानीय प्रशासन की टीम लापता लोगों की तलाश और प्रभावित क्षेत्रों में राहत–बचाव कार्य में जुटी है। पाल्पा पुलिस कार्यालय के सूचना अधिकारी भीमलाल भट्टाराई के मुताबिक, माथागढ़ी गाउँपालिका–2, रूपसे राजौली निवासी 75 वर्षीय शेरबहादुर चिदी की घर के ऊपर लैंडस्लाइड का मलबा गिरने से मौत हो गई। वहीं रिब्दीकोट गाउँपालिका–6, तिमुरे में घर लैंडस्लाइड में दबने से लापता 59 वर्षीय कृष्णा कुमारी सरु का शव तलाश के दौरान बरामद किया गया।

रविवार सुबह करीब पांच बजे माथागढ़ी गाउँपालिका–3, कासेनी में लील बहादुर घर्ती मगर का घर भी लैंडस्लाइड की चपेट में आ गया। वार्ड अध्यक्ष तेज बहादुर घर्ती मगर के अनुसार घर में सो रहे लील बहादुर घर्ती, झरना घर्ती और दीना घर्ती लापता हैं। उनकी तलाश की जा रही है। बाढ़ और लैंडस्लाइड के कारण बिजली सेवा प्रभावित होने से जिले के कई क्षेत्रों में संचार संपर्क भी बाधित हुआ है। पाल्पा का मुख्य अनाज गोदाम मडीफांट भी बाढ़ के पानी में डूब गया है। झादेवा फांट समेत कई इलाकों में पानी घुसने से धान की फसल को नुकसान पहुंचा है। रानीमहल क्षेत्र में बाढ़ का पानी होटल और रेस्टोरेंट में भी घुस गया है। माथागढ़ी गाउँपालिका–4, झादेवा के देउगीर क्षेत्र में जमीन धंसने से दर्जनों घरों पर खतरा मंडरा रहा है। वहीं लैंडस्लाइड के कारण जिला मुख्यालय को जोड़ने वाली कई ग्रामीण सड़कें बंद हो गई हैं। इनमें हरथौक–छहारा, बस्तरी–झादेवा और आर्यभंज्यांग–रामपुर सड़क शामिल हैं। पुलिस के अनुसार प्रभावित क्षेत्रों में राहत–बचाव और सड़क खोलने का काम जारी है।

राम–जानकी मंदिर में चोरों ने किया हाथ साफ, अष्टधातु की प्राचीन मूर्तियां चोरी

संवाददाता–अयोध्या। अयोध्या के चौकी चौक क्षेत्र के टकसाल चौक स्थित प्राचीन श्री राम–जानकी मंदिर (रामयश कीर्तन सभा, पुराना प्रभात सिनेमा) में चोरी की एक सनसनीखेज वारदात सामने आई है। 25 सितंबर 2026 की शाम जब पुजारी जी आरती के लिए मंदिर पहुंचे, तो वहां का ताला टूटा हुआ मिला। चोर मंदिर से बहुमूल्य अष्टधातु की श्री राम, जानकी जी और लक्ष्मण जी की प्राचीन मूर्तियां समेत पूजा का सामान और लोटा–घंटा तक पार कर ले गए। मामले में रामयश कीर्तन सभा के अध्यक्ष सुनील कुमार त्रिवेदी ने चौकी चौक पुलिस को प्रार्थना पत्र सौंपकर दिल्ली दरवाजा निवासी लवकुश गुप्ता (पुत्र स्व. मिन्नू गुप्ता) पर वारदात को अंजाम देने की पूरी आशंका जताई है। तहरीर मिलते ही पुलिस एक्शन मेंस तहरीर मिलने के बाद पुलिस पूरी तत्परता से जांच में जुट गई है। पुलिस आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाल रही है और नामजद आरोपी की तलाश में लगातार संभावित ठिकानों पर दबिश दे रही है। धर्मनगरी में आस्था पर हुए इस प्रहार के बाद देखना होगा कि खाकी कब तक मूर्तियों को बरामद कर आरोपियों को सलाखों के पीछे पहुंचाती है।

डोमिनगढ़, इलाहीबाग व बसियाडीह रेग्युलेटर बंद, पूरी क्षमता पर चल रहे पम्पिंग स्टेशन

संवाददाता–गोरखपुर। राजीव दत्त पाण्डेय। भारी बारिश के बीच रात्री और रोहिन नदी के बढ़ते जलस्तर को देखते हुए ड्रेनेज खण्ड सिंचाई विभाग ने रविवार की सुबह क्रमशरू हार्बर्ट बांध और माधोपुर बांध पर दो रेग्युलेटर बंद कर दिए। ताकि नदी का पानी महागर में न आए। शेष अन्य रेग्युलेटर पर भी निगरानी बढ़ा दी गई है ताकि जलस्तर बढ़ने पर समय रहते उन्हें भी बंद किया जा सके। रात्री नदी के हार्बर्ट बांध पर रेग्युलेटर नम्बर एक डोमिनगढ़ (चेनेज 0.250 किमी) एवं रेग्युलेटर नम्बर तीन चेनेज 01.30 किमी इलाहीबाग को बंद किया गया है। इसी तरह रोहिन नदी के माधोपुर बांध पर रेग्युलेटर नम्बर एक चेनेज 0.250 किमी बसियाडीह को बंद कर दिया गया। अब नगर निगम 1171 एचपी क्षमता के डोमिनगढ़ पम्पिंग स्टेशन को 14 पम्प के साथ पूर्ण क्षमता से संचालित कर रहा है। वहीं, इलाहीबाग पम्पिंग स्टेशन की 1076 एचपी क्षमता है। यहां 13 पम्प लगाए गए हैं। माधोपुर बांध पर बसियाडीह पम्पिंग स्टेशन पर 392 एचपी क्षमता के 09 पम्प लगाए गए हैं। ये सभी पम्प महानगर के तकरीब 40 फीसदी हिस्से के जलभराव को रात्री नदी और रोहिन नदी में ड्रेन करते हैं। इलेक्ट्रिक और डीजल से चलने वाले इन पम्पों के लिए नगर आयुक्त अजय जैन ने पर्याप्त मात्रा में डीजल का इंतजाम करने का निर्देश दिया है। यह भी हिदायत दी गई है कि बिजली बाधित न हो, इसका भी ध्यान रखा जाए।

ड्रेनेज खण्ड सिंचाई विभाग के अवर अभियंता धर्मेंद्र कुमार कहते हैं कि रात्री नदी तटबंध पर स्थित महेवा कटनिया, रेग्युलेटर नम्बर 8 महेवा ट्रांसपोर्टनगर, रेग्युलेटर नम्बर 03 हॉसपुर, रेग्युलेटर नम्बर 05 नरकटिया, रेग्युलेटर नम्बर 04 मिर्जापुर, रेग्युलेटर नम्बर 02 बहरामपुर एवं रोहिन नदी पर रेग्युलेटर नम्बर 02 सुभाष चंद्र बोसनगर की 24 घंटे निगरानी रखी जा रही है। ताकि नदी का जल स्तर बढ़ने पर तत्काल इन रेग्युलेटर को बंद किया जा सके।

एसपी नाथ ने झंगहा में शांति व्यवस्था को लेकर किया संवाद

संवाददाता–गोरखपुर। क्षेत्र में शांति एवं कानून–व्यवस्था बनाए रखने के लिए पुलिस अधीक्षक उत्तरी राजेश गुनावत ने रविवार को झंगहा में पुलिस, मीडिया और क्षेत्र के संभ्रांत लोगों के साथ बैठक कर संवाद किया। उन्होंने संवेदनशील क्षेत्रों में सीसीटीवी कैमरे लगवाने, रात में लगातार गश्त करने और अराजकतत्वों के खिलाफ प्रभावी कार्रवाई करने का निर्देश दिया। साथ ही सड़क हादसों पर अंकुश लगाने के लिए लोगों को यातायात नियमों का पालन कराने और कच्ची शराब से जुड़ी समस्याओं पर भी प्रभावी कार्रवाई के निर्देश दिए। एसपी नाथ ने कहा कि क्षेत्र में शांति और सौहार्द बनाए रखना पुलिस की प्राथमिकता है।

सार्वजनिक सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि साझेदारी फर्म M/s SHUBHAM ASSOCIATES, पता- मजीठा, हैदरगढ़ रोड, बाराबंकी (उ.प्र.) के साझेदारों में गंभीर आंतरिक विवाद व धोखाधड़ी होने के कारण फर्म का संचालन बाधित हो गया है।

फर्म के नाम पर संचालित निम्न बैंक खातों को फ्रीज / बंद करने हेतु संबंधित बैंकों को लिखित आवेदन दे दिया गया है:-

1. IDBI Bank, Lucknow, UP - A/c No. 0314102000007467
2. HDFC Bank Ltd., Gorakhpur, UP - A/c No. 50200042352368

इस सूचना दिनांक 23/09/2026 के बाद फर्म M/s SHUBHAM ASSOCIATES के नाम से या मिलते-जुलते नाम से कोई भी नया चालू खाता, करंट अकाउंट, OD या लोन खाता किसी भी बैंक में, प्रार्थी आशीष कुमार सिंह की लिखित सहमति के बिना न खोला जाए। बिना सहमति का खाता अवैध माना जाएगा।

दिनांक 23/09/2026 के बाद कोई भी व्यक्ति फर्म के किसी साझेदार व्यक्तिगत रूप से कोई वित्तीय लेन-देन न करे। यदि कोई करता है तो वह स्वयं जिम्मेदार होगा।

प्रार्थी साझेदार: आशीष कुमार सिंह
C-1358, इंदिरा नगर, लखनऊ - 226016 - मो. 8400949595

दिनांक: 23.09.2026

दैनिक भारतीय बस्ती
संस्थापक सम्पादक स्व. दिनेश चन्द्र पाण्डेय
स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक प्रदीप चन्द्र पाण्डेय द्वारा दर्पण प्रिन्टिंग प्रेस वि0. नया हाल 1–4 A लोहिया काम्पलेक्स जिला पंचायत भवन गांधीनगर बस्ती (उ.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

प्रबन्ध सम्पादक–दिनेश सिंह
संयुक्त सम्पादक–प्रदीप चन्द्र पाण्डेय
अयोध्या–फैजाबाद कार्यालय–
चतुर्भुजी मंदिर परिसर लक्ष्मण घाट
अयोध्या–फैजाबाद
लखनऊ कार्यालय–
आशियाना चौराहा, एल.डी.ए. कालोनी, सेक्टर एच. कानपुर रोड लखनऊ।
गोरखपुर कार्यालय–
इलाहीबाग गोरखपुर।
मो0 9336715406, 8400925463
ई.मेल bhartiyabasti@gmail.com
dainikbhartiyabasti@gmail.com